भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 278 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज   शनिवार 02 सितम्बर 2021   विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान

प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

'सत्ताधारी दल से मिल जाती है पुलिस, देश में स्थिति दुखद', खाकी और खादी के गठजोड़ पर सीजेआई सख्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजनेताओं और नौकरशाहों खासकर पुलिस अधिकारियों के बीच नेक्सस को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने कड़ी टिप्पणी की है। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि एक बार उसने यह सोचा था कि हाईकोर्ट के मुख्य न्यायधीशों की अध्यक्षता में एक स्टैंडिंग कमेटी बनाई जाए जो इस तरह की शिकायतों की जांच करे। मुख्य न्यायाधीश एन वी रमनन ने कहा 'मुझे आपत्ति है कि कैसे ब्यूरोक्रेसी खासकर कैसे पुलिस अधिकारी इस देश में व्यवहार कर रहे हैं।' 'एक बार मैं सोच रहा था एक स्टैंडिंग कमेटी बनाने की ताकि वो ब्यूरोक्रेट्स खासकर पुलिस अधिकारियों के खिलाफ आने वाली इस तरह की

शिकायतों की जांच कर सके। इस कमेटी की अध्यक्षता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश करते। अब मैं इसे सुरक्षित रखता हूं...मैं इसे अभी नहीं करना चाहता। देश के मुख्य न्यायाधीश ने यह टिप्पणी उस वक्त की जब वो उस बेंच की अध्यक्षता कर रहे थे जो तीन अलग-अलग याचिकाओं की सुनवाई कर रही थी। इसमें सीनियर आईपीएस अफसर गुरजिंदर पाल सिंह की तीन अलग-अलग याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। राज्य सरकार ने उनके खिलाफ भ्रष्टाचार, रंगदारी और विद्रोह के मामले दर्ज हैं। सीनियर अधिकारी ने सुप्रीम कोर्ट से सुरक्षा की गुहार लगाई है।

याचिका पर सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस ने कहा,' देश में स्थिति दुखद है। जब कोई राजनीतिक दल सत्ता में होता है तो पुलिस अधिकारी एक विशेष दल के साथ होते हैं। फिर जब कोई नई पार्टी सत्ता में आती है तो सरकार उन अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू करती है। यह एक नया चलन है, जिसे रोकने की जरूरत है।' एडीजी गुरजिंद पाल सिंह के खिलाफ जबरन वसूली के एक मामले के संबंध में सीजेआई ने इससे पहले अपनी टिपप्णी में कहा था, 'आपने पैसा ऐठना शुरू कर दिया है क्योंकि आप सरकार के करीबी हैं, यही होता है यदि आप सरकार के करीबी हैं और इस प्रकार की चीजें करते हैं, तो आपको एक दिन वापस भुगतान करना होगा, ठीक ऐसा ही हो रहा है। बता दें कि गुरजिंदर पाल सिंह 1994 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं. छत्तीसगढ़ सरकार ने उन्हें आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के मामले में गुरजिंदर पाल सिंह को निलंबित किया हुआ है। निलंबित 33 के खिलाफ छ्झ्ण् की धारा 124 के तहत राजद्रोह और आय से अधिक संपत्ति के मामले दर्ज किए गए हैं। इसी को लेकर उन्होंने दो याचिकाएं दाखिल की हैं। एक में राजद्रोह के मामले को रद्द करने की मांग है और दूसरी में मामले की जांच सीबीआई से कराने की मांग है।

एलए पर चीन बढ़ा रहा है सैनिक-हथियार, जवाबी तैयारियों को परखने लद्दाख पहुंचे आर्मी चीफ नरवणे

श्रीनगर (एजेंसी)। आर्मी प्रमुख एमएम नरवणे आज दो दिवसीय दौरे पर लद्दाख पहुंचे। यहां उन्होंने लद्दाख के पूर्वी क्षेत्र का दौरा किया। बताया जा रहा है कि सदिर्यों के मौसम में बर्फबारी होने के बाद लद्दाख का अधिकांश क्षेत्र बर्फ के कारण देश के शेष हिस्सों से कट जाता है। ऐसे में चीन सीमावर्ती इलाकों में बड़ी संख्या में सैनिकों और हथियारों की तैनाती कर रहा है। एनआई की खबर के मुताबिक, भारत-चीन सीमा पर तैनात भारतीय जवानों का उत्साह बढ़ाने के

लिए सेना प्रमुख अपने प्रवास के दौरान उन कठिन इलाकों में जाकर तैनात सैनिकों के साथ बातचीत करेंगे। उनका उत्साह भी बढ़ाएंगे। उन्होंने राजभवन में जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल राधा कृष्ण माथुर से भी मुलाकात की। दोनों के बीच कश्मीर में सुरक्षा हालातों पर विस्तृत चर्चा हुई।सेना प्रमुख नरवणे का लद्दाख दौरा इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि गुरुवार को विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा था कि चीन सीमावर्ती इलाकों में बड़ी संख्या में सैनिकों और हथियारों की तैनाती कर रहा है। इसके जवाब में भारतीय सशस्त्र बलों ने भी बड़ी संख्या में अपनी तैनाती सुनिश्चित की है। जम्मू और कश्मीरः मुझे फिर से नजरबंद किय ा गया,झ्झ् अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती का दावा महबूबा मुफ्ती को फिर से किया गया नजरबंद झ्झ् अध्यक्ष ने किया दावा पूर्वी लद्दाख वही इलाका है, जहां एक साल पहले भारत-चीन सीमा स्थित गलवान घाटी में भारत और चीनी सैनिकों के बीच झड़प हुई थी। इस झड़प में भारत के 20 जवान शहीद हुए थे। इससे पहले आज, अतिरिक्त जन सूचना महानिदेशालय ने बताया कि अपनी यात्रा के दौरान नरवणे लद्दाख क्षेत्र में मौजूदा सुरक्षा स्थिति और परिचालन की तैयारियों की समीक्षा करेंगे। वह इलाके में तैनात जवानों से भी बातचीत करेंगे और उनकी हौसला-अफजाई करेंगे।

जम्मू-कश्मीर में सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता, लश्कर-ए-तैयबा के तीन आतंकी गिरफ्तार

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर के कुलगाम जिले में सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता मिली है। शुक्रवार को वाहन चेकिंग के दौरान लश्कर-ए-तैयबा के तीन आतंकी गिरफ्तार हुए। इनके पास से भारी

मात्रा में हथियार और गोला-बारूद भी बरामद हुआ है। पीटीआई से बातचीत में एक अधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार किए गए तीनों आतंकियों की पहचान आबिद मुश्ताक, आदिल जमाल और दानिश रसूल भट्ट के रूप में हुई है। तीनों पुलवामा जिले के त्राल क्षेत्र के रहने वाले बताए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि कुलगाम जिले के मीर बाजार में एक चौकी पर सुरक्षाबलों को संदिग्धों की सूचना मिली थी। जिस पर इलाके में सघन वाहन चेकिंग की गई। वाहन की जांच के दौरान सुरक्षाबलों ने तीनों को पकड़ा। उनमें से दो कार में सवार थे जबकि एक मोटरसाइकिल से जा रहा था। अधिकारी ने बताया कि इन तीनों के पास से चार हथगोले, चार डिटोनेटर, एक देसी बम, एक एके 47 राइफल, एक मैगजीन और पिस्तौल की गोलियां बरामद हुई हैं। तीनों से फिलहाल पूछताछ की जा रही है।

भारत के ऐक्शन से 'सकते' में ब्रिटिश सरकार, कोरोना वैक्सीन सर्टिफिकेट पर बदले सुर

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना वैक्सीन सर्टिफिकेट को मान्यता न देने पर भारत की कार्रवाई से ब्रिटिश सरकार सकते है। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक, भारत में ब्रिटिश उच्चायोग के प्रवक्ता ने कहा है कि हम भारतीय कोरोना वैक्सीन सर्टिफिकेट को मान्यता देने के लिए मोदी सरकार को तकनीकी सहयोग जारी रखेंगे। बता दें कि ब्रिटेन ने भारत के कोरोना वैक्सीन सर्टिफिकेट को अब तक मान्यता नहीं दी है, जिस पर जवाबी कार्रवाई करते हुए भारत सरकार ने आज ऐलान किया कि ब्रिटेन से आने वाले लोगों के लिए भारत में 10 दिनों

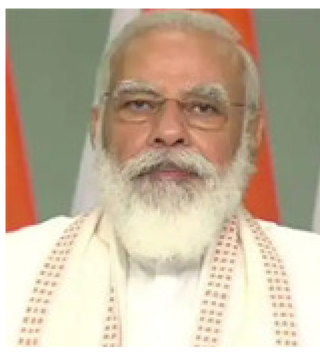

तक क्वारंटीन में रहना जरूरी होगा। हले ब्रिटेन ने भारत में लगने वाली कोविशील्ड वैक्सीन को ही मंजूरी प्राप्त टीकों से बाहर रखा था, जिस पर भारत ने उसे 'जैसे को तैसा' रवैया अपनाते हुए कार्रवाई की चेतावनी दी थी। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने वैक्सीन को तो मंजूरी दे दी, लेकिन तकनीकी पेच फंसाते हुए सर्टिफिकेट पर सवाल उठा दिया था।

यही नहीं इसके लिए वैक्सीनेशन के स्टेटस का भी कोई प्रावधान नहीं रखा गया है। भले ही आने वाले यात्री को कोरोना वैक्सीन के दो टीके लग चुके हों, लेकिन उसे आइसोलेशन में रहना होगा। इसके अलावा भारत आने के लिए भी कुछ नियम तय किए गए हैं। ब्रिटेन से आने वाले यात्रियों के लिए यह जरूरी होगा कि सफर से 72 घंटे पहले तक के कोरोना आरटीपीसीआर टेस्ट की रिपोर्ट उनके पास हो।

परमबीर सिंह के खिलाफ लुकआउट नोटिस, महाराष्ट्र के गृहमंत्री ने कहा- देश छोड़कर भागने की सूचना

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई के पूर्व पुलिस कमिशन्र परमबीर सिंह के खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया गया है। महाराष्ट्र के गृहमंत्री दिलीप वलसे पाटिल ने यह जानकारी देते हुए कहा है कि परमबीर सिंह के देश से भागने को लेकर मिले इनपुट के बाद यह कदम उठाया गया है। वलसे ने गुरुवार को एक कार्यक्रम के इतर कहा, ''इनपुट हैं कि सिंह ने देश छोड़ दिया होगा। लेकिन कोई पुख्ता जानकारी अब तक नहीं है। एक सरकारी अधिकारी के नाते विदेश यात्रा को लेकर प्रतिबंध हैं। आप सरकार की इजाजत के बगैर देश नहीं छोड़ सकते हैं। फिर भी यदि वह गए हैं तो यह ठीक नहीं है। वलसे ने कहा कि परमबीर सिंह की तलाश के लिए राज्य सरकार केंद्र के साथ संपर्क में भी है। मुंबई के पूर्व पुलिस कमिशन्र ने तत्कालीन गृहमंत्री अनिल देशमुख पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए गए थे। आईपीएस अधिकारी की ओर से लगाए गए आरोपों की जांच सीबीआई और ईडी के पास है। मुंबई पुलिस कमिशन्र पद से हटाए जाने और होम गार्ड में ट्रांसफर के बाद परमबीर सिंह ने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को लिखे खत में आरोप लगाया था कि देशमुख ने पुलिस अधिकारियों को मुंबई में वसूली का टारगेट दिया था।

बढ़ सकती है महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री की मुश्किलें, सीबीआई को 50 पुलिस अधिकारियों के ट्रांसफर-पोस्टिंग में नजर आई गड़बड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के चर्चित भ्रष्टाचार मामले में कुर्सी गंवाने वाले राज्य के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। ट्रांसफर-पोस्टिंग से जुड़े मामले की जांच कर रही सीबीआई की जांच अहम मोड़ पर पहुंच चुकी है। दरअसल सीबीआई को अपनी जांच में पता चला है कि महाराष्ट्र में करीब 50 पुलिस अधिकारियों के ट्रांसफर-पोस्टिंग में गड़बड़ी हुई है। सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि इस केस की जांच में सीबीआई ने पाया है कि जब अनिल देशमुख राज्य के गृहमंत्री थे तब कई वरिष्ठ अधिकारियों के तबादले और पोस्टिंग में कई तरह की अनियमितताएं बरती गईं। सूत्रों के मुताबिक सभी ट्रांसप पुलिस एसटाब्लिस्मेंट बोर्ड यानी पीईबी की मीटिंग के बाद हुए थे। यह मीटिंग सितंबर 2020 में हुई थी। अब यह मीटिंग जांच टीम के रडार पर है। महाराष्ट्र पुलिस एक्ट के मुताबिक हाई-प्रोफाइल ट्रांसफर से पहले पीईबी की मीटिंग जरुरी है।

इस मीटिंग की अध्यक्षता एडिशनल चीफ सेक्रेटरी (गृह विभाग) करते हैं। जबकि डीजीपी और आईजी इसके वाइस चेयरपर्सन होते हैं। इस मीटिंग में महाराष्ट्र के अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी मौजूद रहते हैं। जिसके बाद ट्रांसफर-पोस्टिंग को लेकर अंतिम निणग्य लिया जाता है।

महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख पर 100 करोड़ रुपए की वसूली के आरोपों की जांच कर रही सीबीआई ने राज्य के मुख्य सचिव सीताराम कुंटे और डीजीपी संजय पांडे को तलब भी किया है। देशमुख पिछले तीन महीने से फरार चल रहे हैं। बता दें की सीबीआई के साथ-साथ प्रवर्तन निदेशालय भी मनी लॉन्ड्रिंग की जांच कर रहा है। आपको बता दें कि मुंबई पुलिस के पूर्व कमिशन्र परमबीर सिंह ने अपनी एक चिट्ठी में आरोप लगाया था कि अनिल देशमुख उगाही में शामिल थे। उन्होंने मुंबई पुलिस के एक अधिकारी सचिव वाजे पर दवाब बनाया था कि वो हर महीने 100 करोड़ रुपए की उगाही करें। परमबीर सिंह ने यह चिट्ठी राज्य के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को लिखी थी।

सिब्बल के बाद हुड्डा ने भी उठाए सवाल, बोले- बेहतर तरीके से संभाला जा सकता था पंजाब, परमानेंट अध्यक्ष की जरूरत

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने पंजाब में कांग्रेस पार्टी की स्थिति पर चिंता व्यक्त की और कहा कि वहां की स्थिति को बेहतर तरीके से संभाला जा सकता था। ये सही नहीं है कि पार्टी से लोग लगातार निकल रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस को एक पूर्णकालिक अध्यक्ष की जरूरत है।एक बातचीत करते हुए भूपिंदर सिंह हुड्डा ने कहा, ठपंजाब को बेहतर तरीके से संभाला जा सकता था। भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कपिल सिब्बल के घर पर यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन पर भी सवाल उठाए। कहा कि पार्टी के वरिष्ठ नेता के घर के बाहर उसी पार्टी के कार्यकर्ता नारेबाजी करें, ये सही नहीं है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने पार्टी से कई नेताओं के मोहभंग पर भी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व को इन मामलों पर मंथन करना चाहिए। हुड्डा ने कहा कि कांग्रेस का कमजोर होना राष्ट्रीय हित में नहीं है। हुड्डा भी उस जी-23 समूह का हिस्सा हैं, जिसने पिछले साल पार्टी प्रमुख सोनिया गांधी को पत्र लिखकर कांग्रेस में संगठनात्मक बदलाव की मांग की थी। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, ङ्खऐसी चीज़ें क्यों हो रही हैं पार्टी को मंथन करना चाहिए। इन चीजों का समाधान तलाशने के लिए कोशिश की जानी चाहिए। हुड्डा से पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह के पार्टी छोड़ने वाली बात पर कहा कि वो उनका निजी फैसला हो सकता है। हुड्डा ने आगे कहा कि ऐसा सिर्फ पंजाब में नहीं हो रहा है।

बीजेपी और जेजेपी के कार्यक्रम के दौरान किसानों का प्रदर्शन, पुलिस ने वाटर कैनन का किया इस्तेमाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का प्रदर्शन जारी है। शुक्रवार को किसान झज्जर और अंबाला में जमा थे। यहां पुलिस पर आरोप हैं कि उन्होंने पुलिस पर वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। बताया जा रहा है कि यहां बीजेप और जेजेपी नेता एक कार्यक्रम में जमा हुए थे और किसान इस कार्यक्रम का विरोध कर रहे थे। बताया जा रहा है कि झज्जर में डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला एक कार्यक्रम में शामिल होने गए थे। यहां प्रदर्शनकारी बैरिकेड को तोड़कर आगे निकल गए। यहां एक सरकारी कॉलेज में इस इवेंट का आयोजु हुआ था। पुलिस का कहना है कि कार्यक्रम स्थल पर प्रदर्शनकारी जमा हो गये थे जिन्हें तितर-बितर करने के लिए पानी की बौछार किया गया। इस दौरान प्रदर्शनकारी बैरिकेड को तोड़ कर उस पार चले गये। झज्जर के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और डिप्टी कमिशनर भी कानून-व्यवस्था का जायजा लेने के लिए मौके पर पहुंचे थे। इधर अंबाला में भी पुलिस ने वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। पुलिस ने यहां प्रदर्शनकारी किसानों को तितर-बितर करने के लिए वाटर कैनन का इस्तेमाल किया है। बताया जा रहा है कि किसानों को जानकारी थी कि बीजेपी प्रमुख ओपी धनखड़ और अंबाला के सांसद आर एल कटारिया एक बैठक के लिए यहां आने वाले हैं। इसके बाद किसानों का जुटना शुरू हो गया। इसके बाद किसान बीच सड़क पर बैठ गये और रास्ते को जाम कर दिया। पुलिस का कहना है कि उन्होंने वाटर कैनन का इस्तेमाल उन किसानों पर किया जिन्होंने रास्ते को जाम किया था।

अब लखनऊ में ठेकेदार की पीट-पीटकर हत्या, यूपी में 24 घंटे में तीसरी वारदात

लखनऊ (एजेंसी)। राजधानी लखनऊ में शुक्रवार की शाम एक ठेकेदार की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। घटना गोसाइंगंज इलाके में भूमि विवाद को लेकर हुई है। बताया जा रहा है कि ट्रस्ट की जमीन पर हो रहे निर्माण कार्य को लेकर वहां पर मौजूद मंदिर के पुजारियों को आपत्ति थी। इसके बाद विवाद हुआ और पुजारियों ने मिलकर ठेकेदार की पीट-पीटकर हत्या कर दी। वारदात की जानकारी मिलते ही पुलिस प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंचे और जांच पड़ताल शुरू की। ठेकेदार की पहचान निर्मल अगिन्होत्री के तौर पर हुई है। बताया जा रहा है कि भूमि को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था और पहले भी पुजारियों और ठेकेदार के बीच विवाद हो चुका

था। यूपी में पीट-पीटकर हत्या की 24 घंटे में तीसरी वारदात हुई है। इससे पहले गुरुवार की शाम गोरखपुर में शराब को लेकर कर्मचारी मनीष और संभल में रोटी को लेकर ट्रांसपोर्टर खेमपाल सैनी की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई थी।

मूल रूप से हरदोई के जयसिंह बालागंज निवासी निर्मल कस्बे में पतनी शशि, बेटों प्रशांत व प्रतीक के साथ रहता था। स्थानीय लोगों के अनुसार निर्मल शाम करीब छह बजे मंदिर परिसर के पास भरे पानी को मजदूरों से निकलवा रहा था। इसी दौरान मंदिर के पुजारियों चन्द्र पाल उर्फ बबलू व उसके भाई ओम प्रकाश उर्फ सत्तू से उसे बात करने के बाद बहाने अंदर बुलाया। निर्मल अंदर चला गया और कुछ देर बाद ही वहां लड़ाई की आवाज सुनायी देने लगी। लोग कुछ समझ पाते, तभी तीन-चार पुजारी व उनके साथियों ने खून से लथपथ निर्मल को गेट के बाहर छोड़ा और भाग निकले। मजदूर व आस पास के लोगों ने ट्रस्ट संचालक गणेश को सूचना दी और निर्मल को लेकर अस्पताल गये। वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस के मुताबिक निर्मल के सिर पर चोट के कई निशान थे। पैर में दो-तीन जगह फ्रैक्चर था। गले पर कसाव के निशान थे।

प्रॉपर्टी डीलर मनीष मर्डर मामले में यूपी सरकार ने सीबीआई जांच की सिफारिश की

लखनऊ/कानपुर **(एजेंसी)।** कानपुर के व्यापारी मनीष गुप्ता की गोरखपुर में हुई मौत के मामले की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से कराने की सिफारिश केंद्र सरकार को भेज दी गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर गुरुवार को गृह विभाग ने इस संबंध में केंद्र सरकार को पत्र भेज दिया। अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि जब तक सीबीआई इस मामले की जांच अपने हाथ में नहीं ले लेती है तब तक मामले की जांच गोरखपुर से स्थानान्तरित कर कानपुर में विशेष रूप से गठित एसआईटी के द्वारा की जाएगी। मृतक मनीष गुप्ता की पतनी को कानपुर विकास प्राधिकरण में ओएसडी के पद पर नियुक्त करने के निर्देश भी दिए गए हैं। साथ ही परिवार को 40 लाख रुपये की आर्थिक सहायता राज्य सरकार द्वारा दिए जाने के निर्देश भी दिए गए हैं। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान मृतक मनीष गुप्ता की पतनी मीनाक्षी गुप्ता ने मामले की जांच सीबीआई से कराए जाने की मांग की थी। मुलाकात के दौरान मुख्यमंत्री ने उन्हें सरकारी नौकरी देने और आर्थिक सहायता की राशि बढ़ाए जाने का भरोसा भी दिलाया था।

खबर संक्षेप

सवारियों से भरी विक्रम अनियंत्रित होकर पलटी

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र के उरुवा बाजार में सवारियों से भरी विक्रम अनियंत्रित होकर डिवाइडर से जा भिड़ी जिसमें आधा दर्जन लोग घायल हो गये तथा एक की मौत हो गई। घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजारोड बाजार से एक दर्जन सवारियों को भरकर मांडा की ओर जा रही ओवरलोड विक्रम गाड़ी जैसे ही राष्ट्रीय राजमार्ग (76) के उरुवा बाजार के समीप पहुंची ही थी तभी अनियंत्रित होकर डिवाइडर से जा भिड़ी। विक्रम में सवार राकेश कुमार (22) पुत्र मोती धैकार निवासी मनुका पूरा की मौत हो गयी, तथा आधा दर्जन लोग घायल हो गए सूचना पर पहुंची पुलिस आनन-फानन में घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवा दिया।

तहसील आये होमगार्ड के उपर सांड का हमला गंभीर

करछना। शुक्रवार दोपहर नैनी थाने से होमगार्ड 151 के मुलजिमो को लेकर करछना तहसील आया था जहा तहसील के बाहर एक सांड ने हमला बोल दिया और उठाकर फेंक जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। होमगार्ड जिसका नाम मिश्र 52 वर्तमान में वह नैनी थाने में तैनात है और 151 के तहत पाबंद किए गये मुलजिमो को लेकर तहसील आया था जहा अचानक सांड ने हमला कर दिया जिससे वह बुरी तरह से घायल हो गया।सूचना पर पहुंचे होमगार्ड और करछना पुलिस ने उसे सीएचसी करछना में भर्ती कराया जहा डाक्टरो ने उपचार के बाद जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया।

सेहुँडा में चला वैक्सीनेशन अभियान ग्रामीणों ने लगवाई वैक्सीन

जसरा। विकास खंड जसरा के सेहुँडा ग्राम सभा मे स्वास्थ्य विभाग की टीम के द्वारा कैम्प लगाकर लोगों का वैक्सीनेशन किया गया कोविड कि तीसरी लहर को लेकर स्वास्थ विभाग ने पंचायत स्तर पर वैक्सीनेशन के काम मे तेजी लाते हुए शुक्रवार को लगभग 300 लोगों को वैक्सीन लगाई सीएचसी अधीक्षक डॉ तरूण पाठक ने बताया की ब्लॉक के सभी ग्राम पंचायतों में वैक्सीनेशन का काम तेजी से चल रहा है। उसके साथ ही जो लोग शेष रह जाते हैं उनको सीएचसी में वैक्सीन लगाई जा रही हैं। टीकाकरण में स्वास्थ्य विभाग की टीम के अलावा पुलिस प्रशासन भी मुस्तैद रही। वैक्सीनेशन में मुख्य रूप से एएम शुक्ला वर्मा, श्याम मोहन पाल, राजू कुशवाहा, रामायण प्रसाद विश्वकर्मा, देवेंद्र पांडेय, शिवमोहन पाल, धीरज केसरवानी, सुषमा पाल, सुशीला देवी, ममता देवी, कमलेश, राहुल, भुल्लन, रवि, राघवेंद्र यादव, बलवंत मास्टर, फुज्जी, सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

मिट्टी की दीवार गिरी, मलबे में दबने से बुजुर्ग की मौत

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। फूलपुर क्षेत्र के बिगहियां गांव में शुक्रवार को कच्चे मकान की दीवार ढहने से वृद्ध की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह ग्रामीणों की मदद से मिट्टी के नीचे दबे शव को बाहर निकलवाया।

बाबूगंज के पास स्थित बिगहियां गांव निवासी भगौतीदीन शुक्रवार को दो मजदूरों की मदद से अपने कच्चे मकान को दुरुस्त कर रहे थे। तभी दोपहर लगभग चार बजे अचानक कच्चे जर्जर मकान की दीवार ढह गई। दीवार को गिरते देख काम कर रहे मजदूर शोर मचाते हुए भागने लगे। वहीं भगौतीदीन 60 दीवार की चपेट में आ गए। जिससे कच्चे मकान के मलबे में दबने से उनकी मौत हो गई। सूचना पर पहुंची फूलपुर पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से शव को बाहर निकाला। पुलिस ने शव को थाने ले जाकर आवश्यक कार्रवाई के बाद पीएम के लिए भेज दिया वहीं घटना से पत्नी शमला देवी के साथ ही परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। ग्रामीणों ने बताया कि मृतक के पांच पुत्र व दो पुत्रियां हैं।

पुलिस के साथ बुजुर्ग का शव निकालने की कोशिश करते ग्रामीण

एक दिसंबर को होगा हाईकोर्ट बार एसोसिएशन का चुनाव

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन का वर्ष 2021-22 का वार्षिक चुनाव एक दिसंबर को होगा। इसके साथ ही हाईकोर्ट ने एल्डर कमेटी के सदस्यों के नाम भी तय कर दिए हैं। 18 अक्तूबर को आम सभा की बैठक बुलाकर चुनाव प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया है। मार्च 2019 के बाद बार के आम चुनाव कोरोना के कारण नहीं हो सके थे। इसे लेकर अधिवक्ता संतोष कुमार मिश्र व अन्य ने जनहित याचिका दाखिल की थी।

याचिका में एल्डर कमेटी के चेयरमैन के पद पर वरिष्ठ अधिवक्ता जीएस चतुर्वेदी की नियुक्ति करने को चुनौती दी गई थी। साथ ही चुनाव कराने की भी मांग की गई। मामले की सुनवाई कर रही कार्यवाहक मुख्य न्यायमूर्ति एमएन भंडारी और न्यायमूर्ति पीयूष अग्रवाल की पीठ ने दोनों पक्षों याचिकाकर्ताओं और बार कार्यकारिणी को आपसी सहमति से मामला सुलझाने का अनुरोध किया। कोर्ट के कहने पर दोनों पक्षों ने पांच पांच वरिष्ठ अधिवक्ताओं की कमेटी बनाकर

हाईकोर्ट ने तय किए एल्डर कमेटी सदस्यों के नाम

बैठक की, मगर कोई सहमति नहीं बन सकी। मामला फिर से अदालत के समक्ष पहुंचने पर कोर्ट के अनुरोध पर दोनों पक्षों की ओर से दो-दो वरिष्ठ अधिवक्ताओं के नाम एल्डर कमेटी की के लिए सुझाए गए। जबकि चेयरमैन पद के लिए कोर्ट ने स्वयं नाम तय किया। इस प्रकार से एल्डर कमेटी के लिए वरिष्ठ अधिवक्ता एनसी राजवंशी, टीपी सिंह, ओपी सिंह और अनिल तिवारी के नाम तय किए गए। कमेटी के अध्यक्ष पद पर कोर्ट ने वरिष्ठ अधिवक्ता और अपर सॉलिसिटर जनरल शशि प्रकाश सिंह को नियुक्त किया है। कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि यह कमेटी सिर्फ एक बार के लिए अपवाद स्वरूप गठित की गई है। कमेटी बार के नियम कायदों के अनुसार काम करेगी और चुनाव कराएगी। दोनों पक्षों की सहमति से आम सभा की बैठक के लिए 18 अक्तूबर की तारीख नियत की गई है। कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि यह व्यवस्था मात्र इस वर्ष का चुनाव कराने के लिए की गई है तथा भविष्य के लिए इस आदेश को नजीर न बनाया जाए।

न्यूज झरोखा

कनेक्शन के बाद सिलेंडर, चूल्हा न मिलने पर महिला ने की शिकायत, हुआ निस्तारण

मेजा रोड। भारत गैस में कनेक्शन के बावजूद सिलेंडर व चूल्हा न मिलने से महिला के द्वारा शिकायत की गई थी, जिसका निस्तारण करते हुए भारत गैस ने महिला को सिलेंडर और चूल्हा दिया। बता दें कि उरुवा ब्लॉक के परानीपुर गांव की रेखा देवी ने उप जिलाधिकारी मेजा व जिलापूर्ति अधिकारी से शिकायत किया था कि भारत गैस में कनेक्शन होने के बावजूद महिला को गैस सिलेंडर और चूल्हा नहीं मिला। वहीं शिकायत के बाद भारत गैस के प्रोपराइटर ने महिला को गैस सिलेंडर, चूल्हा, रेगुलेटर व अन्य उपकरण सौंपा। भारत गैस ने शिकायत समाप्त करने के लिए उप जिलाधिकारी मेजा व जिलापूर्ति अधिकारी को पत्र लिखा है।

कार्तिकेय कुशवाहा बने भाजपा जिला कार्यकारिणी युवा मोर्चा के सदस्य

करछना। विधान सभा करछना क्षेत्र के भाजपा पार्टी के लिए लम्बे समय से पार्टी के लिए ईमानदारी से लोगों के बीच सक्रिय रहे और भाजपा पार्टी के छोटे बड़े कार्यक्रमों में भागीदारी का परिचय दिया है जिन्हें पार्टी पदाधिकारियों ने कार्तिकेय कुशवाहा को जिला कार्यकारिणी सदस्य बनाए जाने पर क्षेत्रवासियों एवं कार्यकर्ताओं ने खुशी जाहिर करते हुए बधाई दी है। कार्तिकेय कुशवाहा को जिला कार्यकारिणी सदस्य भारतीय जनता युवा मोर्चा बनाए जाने पर शीर्ष नेतृत्व व जिला के पदाधिकारियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए जिला अध्यक्ष विभव नाथ भारतीय जिला अध्यक्ष युवा मोर्चा सुधाकर पांडे मंडल अध्यक्ष पंकज द्विवेदी महेंद्र सिंह पटेल जिला मंत्री शिवम सिंह अंकित कुशवाहा आदि पार्टी के कार्यकर्ताओं ने बधाई दी है।

राज्य एवं केंद्र की अनेकों योजनाएं किसानों की दिशा और दशा बदल रही : गिरीश चतुर्वेदी

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। भारतीय जनता पार्टी यमुनापार किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष अरूण कुमार सिंह पप्पू व प्रदेश के निर्देशानुसार पूरे यमुनापार के बीसों मंडलों के साथ कौंधियारा मंडल की प्रथम संगठनात्मक योजना बैठक कौंधियारा के डिग्री कालेज में सम्पन्न हुई। बैठक मे मंडल प्रभारी जिला मीडिया प्रभारी किसान मोर्चा गिरीश कुमार चतुर्वेदी ने पहली बैठक मे सभी से परिचय प्राप्त करते हुए कार्यकर्ताओं से कहा कि प्रदेश और केंद्र सरकार की अन्तर्गत महत्वपूर्ण योजना जो चल रही है,जो कि किसानों की दिशा और दशा बदलने का कार्य कर रही है। उन सब लाभों की जानकारी घर-घर पहुंचाने कार्य करेंगे तो पुनः भाजपा की सरकार बनने से कोई नही रोक सकता। जिला उपाध्यक्ष राकेश सिंह ने कहा भाजपा ही किसानों का उत्थान कर रही है, आगे भी करेंगी। इस लिए हम सब मिलकर पुनः भाजपा की सरकार बनाने को जागरूक करेंगे। बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष अम्बिका प्रसाद तिवारी ने करते हुए सभी का आभार जताया। इसके पूर्व पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी का माल्यार्पण कर वन्दे मातरम् के साथ कार्यक्रम शुभारंभ हुआ। साथ ही गांधी जयंती एवं लाल बहादुर शास्त्री की जयंती की पूर्व संध्या पर भाजपाइयों ने नमन किया। इस अवसर पर नवनियुक्त मंडल के उपाध्यक्ष, मंडल महामंत्री, मंडल मंत्री उपस्थित रहे।

चेहल्लुम पर ताजिया निकाल कर इमाम हुसैन को किया गया याद

अखंड भारत संदेश

कोरांव। करोना काल में जहां एक तरफ सामाजिक कार्य बंद थे वही विगत कई वर्षो से ताजिया पर पूर्ण रूप से पाबंदी के बाद अब जाकर चेहल्लुम के अवसर पर ताजिया निकाली गई जहां पर भारी जन सैलाब के साथ मातम मनाया गया जहां मुस्लिम धर्म के अलावा सदैव की तरह कोरांव में गंगा जमुनी तहजीब के तर्ज पर हिंदू समाज के लोग शामिल दिखे ताजिया को लेकर कोरांव प्रशासन पूर्ण रूप से चौकन्ना दिखा हर चौराहे पर पुलिस तैनात और बिना किसी रोक-टोक के ताजी आगे बढ़ता गया माण्डा वाली रोड पर कोसफरा के तरफ से आने वाली ताजिया और मार्केट की ताजिया का मेल होकर कर्बला पहुंचे ताजिया में जिला सचिव समाजवादी पार्टी एवं किसान नेता राजेश पांडेय ने बताया कि यह कोरांव क्षेत्र हर समय हिंदू मुस्लिम एकता से त्यौहार मनाने का काम करते हैं अगर भाईचारा देखना है कोरांव में दिखाई देता है समाजवादी पार्टी के लोहिया वाहिनी के प्रदेश सचिव शहादत अली ने कहा कि इमाम हुसैन साहब इस्लाम धर्म के लिए हक और सांप की लड़ाई लड़ते रहे उनको सदैव हम लोग याद करते रहेंगे वही विधानसभा प्रभारी जिला सचिव सोमदत्त सिंह पटेल ने ताजिया के साथ चलते हुए हिंदू मुस्लिम एकता की मिसाल कायम रखते हुए सान्ती का संदेश दिया ताजिया में प्रमुख रूप से नौशाद अंसारी शफात अली इसराइल अली मुनव्वर अली तव्वब अली इमरान माजिद मोनू खान ननकू कामता यादव पूर्व प्रधान पथरताल दीपक पटेल संजय सिंह पटेल राजेश यादव मोहम्मद हारून के साथ नगर क्षेत्र के लोगों ने ताजिया के जुलूस में शामिल हुए।

इस्लाम के हक और सच्चाई का रास्ता दिखाया हुसैन ने : शहादत अली

चेहल्लुम पर्व पर ताजिया निकाल कर इमाम हुसैन की याद में मशगूल सैदाई

भाजपा कार्यकर्ता और सरकार ही जनता की सच्ची हितैषी, जो सिद्ध करके दिखाया है : दिलीप चतुर्वेदी

घूरपुर। सोच ईमानदार, काम दमदार" के तहत सबका साथ, सबका विकास,सबका विश्वास के मूल मंत्र को भाजपा सरकार और कार्यकर्ताओं ने जो चरितार्थ किया है। उस विकास की गाथा को सेक्टर कांटी,सेक्टर पवर, सेक्टर कुल्हाड़िया के बूथों पर घर-घर भाजपा जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी कार्यकर्ताओं संग पहुंचा रहे है। और बूथों पर पन्ना प्रमुख बनाने के कार्य मे भी सहयोग दे रहे है। दिलीप चतुर्वेदी ने कार्यकर्ताओं और ग्रामीणों से कहा भाजपा सरकार और कार्यकर्ता ही आपके सच्चे दुःख और सुख के साथी है। जो कोरोनाकॉल जैसे विषम परिस्थितियों मे सिध्द करके दिखाया है। बाकी राजनैतिक पार्टीयां केवल जनता से वोट लेने का षड़यंत्र रचती है। घर-घर सम्पर्क के दौरान जिला सह-मीडिया प्रभारी प्रदीप कुमार मिश्र,मंडल कौंधियारा उपाध्यक्ष शक्ति केन्द संयोजक कांटी आजाद सिंह पटेल, बहुगुणा सिंह, सुधाकर सिंह, शिवपूजन सिंह,राम सुमेर पटेल, राहुल पटेल, राकेश कुमार शर्मा,राम कैलाश बिन्द आदि बूथ अध्यक्ष कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शिक्षकों से डेटा फीडिंग कराए जाने के विरोध में शिक्षक संघ ने सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। परिषदीय विद्यालयों के छात्रों को मिलने वाले ड्रेस,स्वेटर,जूता मोजा,बैग आदि के धन को सीधे अभिभावकों के खाते में भेजे जाने के लिए विभाग द्वारा आये आदेश डेटा फीडिंग कराए जाने को लेकर शिक्षकों में आक्रोश है जिसे लेकर शुक्रवार के दिन उत्तर प्रदेशीयजूनियर हाईस्कूल पूर्वमाध्यमिक शिक्षक संघ जसरा इकाई ने महानिदेशक स्कूल शिक्षा उत्तर प्रदेश को संबोधित 11 सूत्रीय मांग पत्र बीईओ जसरा को सौंपा। ज्ञापन में दर्शाते हुए शिक्षकों ने आरोप लगाया है कि 18 सितंबर को महानिदेशक स्कूल शिक्षा ने एक आदेश जारी किया कि स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों जिनको ड्रेस,स्वेटर,स्कूल बैग,जूता मोजा दिया जाता है। जिसे छात्रों तक पहुंचने के छात्रों के अभिभावकों का बैंक खाता आधार से लिंक कराया जाय। उक्त आदेश का पालन करने में शिक्षकों ने कई समस्याओं से जूझने की बात कही। शिक्षकों का आरोप है कि प्रदेश के 20 फीसदी शिक्षकों के पास एंड्रॉयड फोन नहीं है और ना ही वो चलाना जानते हैं ना ही विभाग से कोई संसाधन ही मिला है। आरोप है कि एक छात्र के फीडिंग कार्य मे शिक्षकों को कम से कम पांच रुपये खर्च करना पड़ेगा जो उसके वेतन से खर्च होगा जिस पर उनके परिवार का अधिकार है। बीआर सी केंद्रों को बड़ा बजट देकर कम्प्यूटरी कृत किया गया है ,ए सब काम वही से कराया जा सकता,लेकिन शिक्षकों को अनावश्यक रूप से दबाव दिया जा रहा है। संघ के अध्यक्ष मनोज पाठक, राजेन्द्र अनुरागी मंत्री,शकील अहमद कोषाध्यक्ष, हरनाम सिंह जिला संगठन मंत्री,निशा त्रिपाठी उपाध्यक्ष,मो० शाकिब संयुक्त मंत्री,गजाला समीम,नीलम सिंह ,रेखा गुप्ता, अमिता पाठक,रेखा गुप्ता, श्यामाकान्त,अनीता पाण्डेय, रिचा मिश्रा,आकांक्षा सिंह आदि उत्तरप्रदेशीय जू०हा०शि०संघ जसरा प्रयागराज शामिल रहे।

बीईओ को ज्ञापन सौंपते शिक्षक संघ

आलोक पाठक जसरा मंडल के मिडिया प्रभारी मनोनीत

जसरा। जसरा के आलोक पाठक को प्रयागराज यमुनापार के जिला मिडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी के द्वारा जसरा मंडल का मिडिया प्रभारी मनोनीत किया गया है जिसकी सूचना स्थानीय लोगों एवम पार्टी से जुड़े अन्य लोगों हो हुई तो बधाइयों का तांता लग गया। इस अवसर पर आलोक पाठक ने जिले के शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार प्रकट करते हुए अपने पद एवम दायित्वों का ईमानदारी पूर्वक निर्वहन का संकल्प लेते हुए यह भी बोले कि कलम के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी के जनकल्याणकारी नीतियों को आम जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे।बधाई देने वालों क्षेत्रीय लोगों सहित मंडल अध्यक्ष जसरा जगत शुक्ला, प्रयाग संगम सेवा संस्थान के अध्यक्ष सुधाशु मिश्रा,रावेंद्र तिवारी, समाजसेवी राजा बाबू सुपरी, महामंत्री नीरज केशरवानी आदि लोगों ने सोशल मिडिया सहित अन्य माध्यमों से शुभकामनायें प्रदान किये हैं।

मजदूरों की समस्या सरकार तक पहुंचाकर कराएंगे निदान

पीपीसीएल के मजदूर चार दिन से बैठे हैं धरने पर

भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल ने मजदूरों को दिया आश्वासन

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। चार दिन से बारा प्रयागराज पावर कारपोरेशन लिमिटेड के सैकड़ों मजदूरों ने अपनी मांगो को लेकर चार दिन से अनवरत धरने पर बैठे हैं। इसकी जानकारी पाते ही भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा यमुनापार के जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल शुक्रवार के दिन धरना स्थल पर पहुंच कर मजदूरों की समस्याओं को सुने। मजदूरों ने बताया कि हम मजदूरों की मांग है कि ठेके पर काम न कराकर कंपनी स्थाई नियुक्ति करे। ठेके पर काम करने पर समय से वेतन नहीं मिलता और अन्य सुविधाएं भी नहीं मिलती है। साथ ही मजदूरों को प्रताड़ित भी किया जाता है। मजदूरों ने यहां तक कहा कि यदि स्थाई नहीं करती तो वेतन ठेकेदार नहीं कंपनी अपने तरफ से करे समस्याएं सुनने के बाद जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल ने मजदूरों को आश्वासन दिया कि आप मजदूरों की बात को सरकार तक पहुँचा कर निदान कराने की पूरी कोशिश की जायेगी। कहा कि आज ही उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से मिलकर आप लोगो की समस्याओं को अवगत कराते हुए जल्द ही निदान किए जाने की कोशिश की जायेगी। जिला अध्यक्ष के साथ किसान मोर्चा पूर्व जिलाध्यक्ष रत्नाकर सिंह, उपाध्यक्ष अखिलेश सिंह पटेल, मंत्री अनुपम सिंह, शंकरगढ़ मण्डल अध्यक्ष कुलदीप सिंह पटेल, पिछड़ा मोर्चा नारीबारी के मण्डल अध्यक्ष अतर मौर्या जी, रत्नाकर सिंह पटेल पिछड़ा मोर्चा मण्डल अध्यक्ष शंकरगढ़, संतोष सिंह, विकास सिंह, सचिन सिंह शामिल रहे।

धरने पर बैठ मजदूरों की समस्या सुनते जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल।

कारोबारी के बेटे ने व्हाट्सएप पर स्टेटस लगाने के बाद यमुना में कूदकर दी जान

प्रयागराज। राजरूपपुर में रहने वाले मिठाई कारोबारी के 17 वर्षीय बेटे कुशाग्र जायसवाल ने यमुना में कूदकर जान दे दी। इससे पहले उसने व्हाट्सएप स्टेटस पर अपनी एक सेल्फी पोस्ट की जिसमें वह रोता हुआ दिख रहा था। राजरूपपुर में रहने वाले रतन जायसवाल मिठाई कारोबारी हैं। उनके तीन बच्चों में कुशाग्र उर्फ विनायक जायसवाल इकलौता बेटा था। पुलिस के मुताबिक, 29 सितंबर की आधी रात करीब पौने दो बजे वह परिवारवालों को बिना बताए घर से निकल गया।नींद खुलने पर उसे घर में ना पाकर परिजनों ने खोजबीन शुरू की लेकिन कुछ पता नहीं चला। इसी दौरान उसका व्हाट्सएप स्टेटस देखने पर उसकी सेल्फी दिखाई दी जिसमें वह नए यमुना पुल पर रोते हुए नजर आ रहा था। परिजनों में मचा कोहराम।पुलिस तलाश में जुटी थी कि बृहस्पतिवार दोपहर कीडगंज में यमुना पुल के पास किशोर की लाश नदी में उतराती मिली।

करछना में नव निर्वाचित प्रधानो को दिया गया प्रशिक्षण

विकास खंड करछना के निर्वाचित प्रधानों को कार्यक्रम में दिया गया प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

करछना। विकास खंड करछना के ग्राम पंचायतों से निर्वाचित प्रधानो को गांवो में कराये जाने वाले विकास कार्यो को लेकर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन ब्लाक मुख्यालय पर मीटिंग हाल में प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम में सबसे पहले माँ सरस्वती की मूर्ति पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की, और उपस्थित महिला व पुरुष ग्राम प्रधानो को खंड विकास अधिकारी करछना जितेन्द्र कुमार, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी, एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा,अल्प नारायण सिंह अध्यक्ष उत्तर प्रदेश लेखा परीक्षा एसोसिएशन के अध्यक्ष, डाक्टर ऋचा, डाक्टर गिरधारी लाल, डॉ शैलेष समसेन, खंड शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार श्रीवास्तव, निमिष पांडेय, प्रमोद कुमार मिश्रा। ने निर्वाचित प्रधानो को उनके दायित्व को लेकर गांवो में कराये जाने वाले विकास कार्यो के विषय पर विस्तार से चर्चा कर जानकारी दी इस मौके पर एडीओ आई एस बी रामेश्वरम प्रसाद सिंह अतुल कुमार मिश्रा खंड प्रेरक, दुष्यंत प्रताप सिंह, मोहम्मद फिरोज, रवि शंकर, अरविंद कुमार, समर सिंह, संजय यादव ब्लाक कर्मी एवं बड़ी संख्या में प्रधान व प्रतिनिधि मौजूद थे।

सहसों ब्लॉक के ग्राम प्रधानों का एक दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

सहसों। नवसृजित विकास खण्ड सहसों से जुड़े 45 ग्राम सभा के सम्मानित ग्राम प्रधानों का एक दिवसीय परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुक्रवार को छत्रपति शिवाजी डिग्री कॉलेज में आयोजित किया गया। कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि फूलपुर विधायक प्रवीण पटेल ने संबोधित करते हुए कहा कि ग्राम प्रधानों की अगुवाई में गांव का पूरी तरह से विकास किया जाता है। सरकार द्वारा गांव के विकास के लिए धन की कोई कमी नहीं होने दिया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ खण्ड विकास अधिकारी दिव्या सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर ब्लाक प्रमुख गीता सिंह व भाजपा जिला उपाध्यक्ष अनिरुद्ध सिंह पटेल ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। खण्ड विकास अधिकारी दिव्या सिंह व एडीओ पंचायत कृष्ण चन्द पांडे ने ग्राम प्रधानों को ग्राम पंचायत की समितियां, पंचायती राज व्यवस्था, ग्राम सभा की बैठकें आदि विषयों पर समुचित जानकारी दिया। प्रशिक्षण के उपरांत उपस्थित सभी ग्राम प्रधानों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र भी वितरित किया गया। इस मौके पर जिला प्रोजेक्ट मैनेजर अजय सिंह, प्रमुख प्रतिनिधि शिव नारायण सिंह गप्पू , जेई गिरजा शंकर यादव, ग्राम पंचायत अधिकारी मोहम्मद असलम, अविनाश सिंह, ग्राम विकास अधिकारी हेमंत सिंह, अजय कुमार राना, लाल प्रताप, रामबहादुर, आसमा सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

ग्राम प्रधानों के एक दिवसीय परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम में विधायक प्रवीण पटेल

केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने प्रयागराज से की स्वच्छता अभियान की शुरूआत

एमएनएनआईटी में स्वच्छता अभियान की शुरूआत करते केंद्रीय खेल मंत्री

शहीद चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। केंद्रीय युवा कल्याण एवं खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने शुक्रवार को मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की। पूरे महीने भर चलने वाले इस कार्यक्रम की शुरूआत केंद्रीय मंत्री ने प्रयागराज से की है। इसमें सभी विभागों से सहभागिता सुनिश्चित करने का आह्वान किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, युवा कल्याण मंत्री उपेंद्र तिवारी, सांसद केशरी देवी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।देश में आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान स्वच्छता की पहल एक अक्टूबर से संगम नगरी प्रयागराज से शुरू हुई। अभियान का लक्ष्य 75 लाख किग्रा कचरे का 31 अक्टूबर तक निस्तारण करना है। राष्ट्रव्यापी आयोजन की शुरूआत संगमनगरी में केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने किया। इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रयागराज के लोग स्वच्छता में इत्हास रचेंगे। उन्होंने कहा कि स्वच्छता के लिए सभी का योगदान जरूरी है। बिना सभी के सहभागिता के देश को संपूर्ण तरीके से स्वच्छ नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि गंगा हमारे देश की धरोहर हैं। गंगा स्वच्छ होगी तभी देश का धरोहर सुरक्षित रहेगा। एम एन एन आईटी कार्यक्रम में हिस्सा लेने के बाद केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने शहीद चंद्रशेखर आजाद पार्क पहुंचकर अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पुष्प अर्पित किया। इस दौरान उन्होंने आजाद पार्क में पौधरोपण भी किया। उन्होंने कहा कि स्वच्छता से ही हम शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

खबर संक्षेप

एमपी एमएलए के विशेष कोर्ट में पहुंचे विधायक विजय मिश्र, दर्ज हुआ बयान

प्रयागराज। एमपी एमएलए की विशेष कोर्ट में विधायक विजय मिश्रा का बयान शुक्रवार को दर्ज किया गया। विशेष कोर्ट के न्यायधीश आलोक कुमार श्रीवास्तव ने आगरा जेल में बंद विजय मिश्रा को बयान दर्ज कराने के लिए जेल से तलब किया था। 2005 में वाराणसी जिले में जेल के अंदर अनुराग त्रिपाठी उर्फ अन्नू की हत्या कर दी गई थी। जिसमें जेलर की ओर से हत्या का मुकदमा पंजीकृत कराया गया था जिसमें उदय भान उर्फ डॉक्टर पूर्व विधायक के साथ अन्य लोग आरोपित हैं हत्या के मामले में विजय मिश्रा गवाह है। मुकदमे में बयान दर्ज कराने के लिए के लिए विजय मिश्रा को कोर्ट ने तलब किया था। एडीजीसी राजेश गुप्ता ने विजय मिश्रा का बयान दर्ज कराया।

शाइन सिटी फजीवाड़ा मामले में डीजीपी तलब

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। निवेशकों के करोड़ों रुपये लूटकर फरार शाइन सिटी कंपनी के सीएमडी राशिद नसीम सहित कई अहम अभियुक्तों की गिरफ्तारी न होने के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। हाईकोर्ट ने मामले में सोमवार को पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को तलब किया है। डीजीपी को इस मामले में अपना स्पष्टीकरण देना होगा। मामले की जांच पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा कर रही है। उसने अब तक 26 लोगों को गिरफ्तार कर लेने की जानकारी कोर्ट को दी है। श्रीराम राम बनाम उत्तर प्रदेश सरकार व अन्य के मामले की सुनवाई कर रहे हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा है कि इस मामले में अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए पर्याप्त समय दिया जा चुका है। बावजूद इसके अभी तक अभियुक्त फरार है। इसमें मुख्य आरोपी राशिद नसीम सहित दो अभियुक्त देश के बाहर हैं जबकि बाकी यहीं हैं। कोर्ट ने मामले में डीजीपी को लगातार मॉनिटरिंग का आदेश दिया है। कहा है कि अगर चार अक्तूबर तक शाइन सिटी कंपनी के सीएमडी राशिद नसीम सहित अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी नहीं होती है तो डीजीपी को कोर्ट के सामने उपस्थित होकर स्पष्टीकरण देना होगा।मामले में सरकार की ओर से पैरवी कर रही अपर शासकीय अधिवक्ता प्रथम मंजू ठाकुर ने कहा कि इस मामले में हाईकोर्ट में मार्च से सुनवाई चल रही है। कुल 287 मुकदमों की पैरवी एक साथ हो रही है बताया जा रहा है कि मामले में मुख्य आरोपी राशिद नसीम की पत्नी और महिला मित्र को भी आर्थिक अपराध शाखा ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है जबकि, राशिद नसीम दुबई में है। उसे यहां लाने के लिए विदेश मंत्रालय के जरिए प्रक्रिया आगे बढ़ाई गई है।

मेजा ऊर्जा निगम एमएनआईटी के बीच तकनीकी सहयोग के लिए एमओयू पर हुए हस्ताक्षर

एमओयू पर हस्ताक्षर के बाद उपस्थित अधिकारी

अखंड भारत संदेश

मेजा। ऊर्जा क्षेत्र में तकनीकी प्रोन्नत तथा पावर प्लांट से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन और अनुसंधान हेतु एवं उच्च तकनीकी शिक्षा ले रहे विद्यार्थियों व्यवहारिक ज्ञान मुहैया कराने के उद्देश्य से मेजा ऊर्जा निगम ने प्रसिद्ध तकनीकी सत्यापन मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान एमएनआईटी प्रयागराज के साथ एक एमओयू पर हस्ताक्षर किया है। मेजा ऊर्जा निगम द्वारा उठाए गए इस समावेश कदम से एमएनआईटी प्रयागराज के छात्रों को न केवल तकनीकी बारीकियों को नजदीक से देखने का मौका मिलेगा बल्कि विद्युत संपन्न को भी तकनीकी विकास के लिए शैक्षिक संस्थान के बौद्धिक क्षमता का लाभ प्राप्त होगा इस एमओयू पर एमएनआईटी प्रयागराज के निदेशक प्रोफेसर राजीव त्रिपाठी व मेजा ऊर्जा निगम की ओर से मुख्य महाप्रबंधक से आरके कनौजिया ने हस्ताक्षर किए इस अवसर पर एनटीपीसी लिमिटेड के निदेशक वित्त तथा मेजा ऊर्जा निगम के अध्यक्ष एके गौतम निदेशक मानव संसाधन डीके पटेल क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक देवाशीष सेन वर्चुअल माध्यम से उपस्थित रहे और अपनी शुभकामनाएं प्रदान की एके गौतम ने अपने संबोधन में कहा कि इससे कौशल विकास के साथ-साथ भविष्य की तकनीकी चुनौतियों का सामना करने में सहयोग मिलेगा डीके पटेल ने ज्ञानार्जन को तकनीकी शिक्षा प्रदान करने का आधार बताते हुए सतत विकास में सहयोग बताएं देवाशीष सेन ने कहा कि इस एम ओ यू से दोनों संस्थाएं परस्पर लाभान्वित होगी मेजा ऊर्जा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राकेश कुमार ने इस अवसर पर सभी का आभार प्रकट करते हुए एमओयू के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की और कहा कि मेजा ऊर्जा एक आदर्श पावर स्टेशन के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित करने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। इस अवसर पर एम यू एन पी एल की ओर से महाप्रबंधक को ओ एड एम अनिल कुमार महाप्रबंधक वित्त नवनीत गोयल अपर महाप्रबंधक मानव प्रवीण गर्ग तथा एमएनआईटी प्रयागराज की और से प्रोफेसर गीतिका एवं डॉ सर्वेश तिवारी आदि मौजूद रहे।

अस्पताल में प्रसूता की मौत, परिजनों ने किया बांदा मार्ग पर चक्काजाम

बांदा मार्ग पर परिजनों द्वारा सड़क जाम व उन्हें समझाने का प्रयास करती पुलिस

जसरा। जसरा में एक निजी अस्पताल के डॉक्टर द्वारा प्रसव के लिए आयी महिला को हीमोग्लोबिन कम बताने के बाद शुक्रवार को सुबह आपरेशन कर दिया गया। आपरेशन द्वारा बच्ची के जन्म के बाद प्रसूता की मौत हो गई। जिसको लेकर ग्रामीणों ने अस्पताल के बाहर प्रयागराज बांदा राजमार्ग पर जाम लगा दिया। घूरपुर थाना क्षेत्र के जसरा के बुदांवा गांव के सामने बिना डिग्री के डॉक्टर रिजवान अहमद जोहरा हॉस्पिटल के नाम से पिछले 10 वर्षों से अस्पताल का संचालन करता है । तथा सभी प्रकार के ऑपरेशन वह स्वयं किया करता है । शुक्रवार बारा थाना क्षेत्र के घुरमी गांव निवासी राम धीरज चौधरी पुत्र भोलानाथ चौधरी गुरुवार की शाम अपनी पत्नी उमा देवी 28 वर्ष को प्रसव पीड़ा होने पर जोहरा अस्पताल ले आया । जहां पर अस्पताल के संचालक डॉक्टर रिजवान अहमद ने बताया कि प्रसूता के शरीर में खून की कमी है। परिजनों से खून चढ़ाने के लिए अस्पताल में 20 हजार रुपये जमा करने के लिए कहा । राम धीरज ने बताया कि वह दो किस्तों में अस्पताल के मैनेजर अरविंद कुमार के पास बीस हजार रुपए जमा कर दिया। शुक्रवार की सुबह डॉक्टर ने कहा कि शहर से खून मंगाया गया है तथा खून चढ़ाने के बाद प्रसूता का ऑपरेशन किया जाएगा। परिजनों ने बताया कि शुक्रवार कि सुबह लगभग 10 बजे महिला को बिना खून चढाएं डॉक्टर रिजवान अहमद ने ऑपरेशन कर दिया । जिसके बाद ऑपरेशन थिएटर में ही महिला की मौत हो गई। जबकि उसने एक स्वस्थ बच्ची को जन्म दिया। प्रसूता की मृत्यु की बात को छुपाने के लिए अस्पताल के लोगों ने प्रसूता के परिजनों से कहा कि महिला की हालत गंभीर है तथा उसे शहर के लिए रेफर किया जा रहा है। कर्मचारी अस्पताल की एंबुलेंस में प्रसूता को लिटा दिया । परिजनों ने देखा कि प्रसूता का शरीर ठंडा पड़ चुका है तथा उसकी मौत हो चुकी है । जिस पर प्रसूता के परिजन डॉक्टर पर महिला को मारने का आरोप लगाने लगे तथा एंबुलेंस को महिला के शव सहित बीच सड़क पर खड़ा करके चक्का जाम कर दिया । वहीं डॉक्टर अपने स्टाफ के साथ मौके से भाग निकला । महिला की मौत की सूचना पर अमरेहा गांव स्थित प्रसूता के मायके से भी सैकड़ों ग्रामीण अस्पताल के बाहर पहुंच गए । सूचना पर पहुंची घूरपुर पुलिस चक्का जाम कर रहे लोगों को समझाने का प्रयास करते रहे लेकिन चक्का जाम कर रहे लोग मानने को तैयार नहीं हुए। परिजन अस्पताल के संचालक डा० रिजवान अहमद के विरुद्ध हत्या का मुकदमा दर्ज करने तथा अस्पताल को बंद कराने की मांग पर अड़े रहे । लगभग दो घंटे तक हाई ड्रामा के बाद परिजनों ने पुलिस की बात डाक्टर के विरुद्ध मुकदमा लिखने की बात पर अड़े रहे। दर्जनों की संख्या में महिलाएं सड़क पर बैठी रहीं । दो घंटे आश्वासन के बाद ग्रामीणों ने चक्का जाम समाप्त कर दिया तथा मृतक महिला के सभी परिजन घूरपुर थाने चले गए। परिजनों ने घटना से संबंधित लिखित तहरीर घूरपुर पुलिस को दे दी है।

कार्यालय ग्राम पंचायत भरहा करछना प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत भरहा विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यों के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 1–10–2021 से दिनांक 03–10–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत भरहा में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 06–10–2021 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 06–10–2021 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	फूल चन्द्र के घर से विक्रमादित्य के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	1.50 लाख	2 माह
2.	सामुदायिक शौचालय बाउन्ड्री कार्य	2.50 लाख	2 माह
3.	श्रीराम के घर से रामराज के घर तक खडंजा कार्य	4.50 लाख	2 माह

जगजीवन लाल
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत भरहा
करछना प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/ग्रा0 पं0 वि0 अधि0/
टेण्डर/कोटेशन/2020–21/दिनांक

महेश कुमार
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत भरहा
करछना प्रयागराज।

कार्यालय ग्राम पंचायत रामगढ़ करछना प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत रामगढ़ विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यों के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 1–10–2021 से दिनांक 03–10–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत रामगढ़ में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 06–10–2021 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 06–10–2021 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	माला देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
2.	गुडिया देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
3.	सिपाही लाल (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
4.	विमला देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
5.	प्रा0वि0से प्रमोद कोलहा के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	2.40 लाख	2 माह
6.	बसंतलाल के घर से तालाब तक नाली निर्माण	2.00 लाख	2 माह

कृष्णावती
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत रामगढ़
करछना प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/ग्रा0 पं0 वि0 अधि0/
टेण्डर/कोटेशन/2020–21/दिनांक

संजीव श्रीवास्तव
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत रामगढ़
करछना प्रयागराज।

कार्यालय ग्राम पंचायत भरहा करछना प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत भरहा विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यों के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 1–10–2021 से दिनांक 03–10–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत भरहा में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 06–10–2021 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 06–10–2021 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	उषा देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
2.	सुषमा देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
3.	उर्मिला देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
4.	रेशमा देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
5.	रामरति (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
6.	जुगुल किशोर (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
7.	सरिता देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
8.	उपमा सिंह (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह
9.	जानकी देवी (पशु शेड)	1.16 लाख	2 माह

जगजीवन लाल
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत भरहा
करछना प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/ग्रा0 पं0 वि0 अधि0/
टेण्डर/कोटेशन/2020–21/दिनांक

महेश कुमार
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत भरहा
करछना प्रयागराज।

कार्यालय ग्राम पंचायत कबरा करछना प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत कबरा विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यों के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 1–10–2021 से दिनांक 03–10–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत कबरा में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 06–10–2021 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 06–10–2021 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	डीहा सरहद से राम जतन यादव के बाग तक इण्टरलाकिंग कार्य	1.50 लाख	2 माह
2.	राम जतन यादव के बाग से मोनू के नलकूप तक इण्टरलाकिंग कार्य	1.30 लाख	2 माह
3.	पाल बस्ती तालाब से शिवधारी की घर से लालधारी के घर तक पक्की नाली निर्माण कार्य	1.70 लाख	2 माह
4.	लाल धारी के घर से राजमणि के घर तक पक्की नाली निर्माण कार्य	1.50 लाख	2 माह
5.	राजमणि के खेत से निविअहवा तक पक्की नाली निर्माण कार्य	1.45 लाख	2 माह
6.	रामलाल के घर से गोपाल पाण्डेय के घर तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	1.72 लाख	2 माह

बब्बू लाल
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत कबरा
करछना प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/ग्रा0 पं0 वि0 अधि0/
टेण्डर/कोटेशन/2020–21/दिनांक

दरबारी लाल
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत कबरा
करछना प्रयागराज।

सेवा सप्ताह कार्यक्रम में 71 शिल्पकारों का हुआ सम्मान

जामताली बाजार में सांसद व विधायक हुए शामिल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। देश के प्रधानमंत्री मोदी के 71वें जन्मदिवस पर सेवा सप्ताह कार्यक्रम के तहत रानीगंज विधानसभा क्षेत्र के जामताली बाजार में भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में 71 क्षेत्रीय शिल्पकारों एवं कामगारों का सम्मान कर उनका अभिनंदन किया गया।

इस दौरान सांसद प्रतापगढ़ संगम लाल गुप्ता ने कहा कि दृढ़ प्रतिज्ञ निणय वाले मोदी और योगी के कुशल नेतृत्व के चलते देश एवं प्रदेश आज हर तरह की चुनैतियों का सामना करने में सक्षम है। क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा ने कहा कि एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय की संकल्पना को साकार कर प्रधानमंत्री मोदी व मुख्यमंत्री योगी ने अपनी जन-कल्याणकारी योजनाओं के धरातलीय क्रियान्वयन से वास्तविक जरूरत मंद व्यक्तियों को उसका समुचित लाभ मिल रहा है। इस मौके पर जिला प्रभारी नागेंद्र रघुवंशी, जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, नगर पंचायत अध्यक्ष मीरा गुप्ता, श्रम प्रकोष्ठ के संयोजक अनूप सिंह, विधान सभा संयोजक संदीप तिवारी, मंडल अध्यक्ष प्रशांत श्रीवास्तव, प्रधान जामताली प्रमोद दुबे इत्यादि उपस्थित रहे। उधर भारतीय जनता पार्टी प्रतापगढ़ के श्रम प्रकोष्ठ के संयोजक अनूप सिंह के संयोजन में आयोजित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस सेवा सप्ताह के अंतर्गत श्रमिक सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पीएम ने जनता के मालिकाना हक को टाटा की तिजोरी में किया कैद : प्रमोद तिवारी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य तथा यूपी आउटरीच एण्ड कोआर्डिनेशन कमेटी के प्रभारी प्रमोद तिवारी एयर इण्डिया को टाटा के द्वारा नीलामी मे बोली लगाकर खरीदने के कदम को देश के स्वाभिमान के लिए अत्यन्त पीड़ादायक कहा है।

उन्होंने कहा कि एयर इण्डिया को लेकर मोदी सरकार ने जनता के एक और बड़े मालिकाना हक को पूंजीपतियो की तिजोरी मे कैद किये जाने का खतरनाक कदम

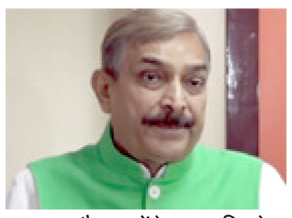

ठहराया है। उन्होंने कहा कि देश और दुनिया में एयर इण्डिया का विमान महाराजा सिर झुकाकर यात्रियों का अभिवादन करता था। जब हर भारतवासी इसे अपना बताकर देश दुनिया मे सिर ऊँचा कर लिया करता था। उन्होनें पीएम मोदी पर तंज कसते हुए कहा कि जिस एयर इण्डिया मे बैठकर प्रधानमंत्री देश विदेश की यात्रा पर जाते थे उसे भी उन्होंने बेंचकर देशवासियों को हिन्दुस्तान के गौरव के भी बिक जाने की असह्य पीड़ा दी है। शुक्रवार को यहां जारी बयान में प्रमोद तिवारी ने कडे अंदाज मे कहा है कि या तो सांसद संगमलाल गुप्ता हिंसा का वीडियो दिखाने की उनकी चुनौती स्वीकार करें या फिर अपने इस घृणित निंदनीय और झूठे कृत्य के लिए माफी मांगे। प्रमोद तिवारी का यह बयान यहां मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल के हवाले से निर्गत हुआ है।

प्रमोद व मोना पर दर्ज मुकदमे से क्षुब्ध बनाई गई मानव श्रृंखला निकाला गया शांति मार्च

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी तथा क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना के समर्थन मे शुक्रवार को कांग्रेसियो के विरोध प्रदर्शन मे प्रबुद्ध वर्ग ने भी मानव श्रृंखला मे भागीदारी कर अपना समर्थन जताया।

दोपहर बडी संख्या मे विधायक मोना तथा प्रमोद तिवारी के खिलाफ सांगीपुर की घटना से जुड़े मुकदमों की अब तक वापसी न होने पर लोग कोतवाली गेट पर जमा हो गये। पूर्व प्राचार्य डा. शिवमूर्ति शास्त्री तथा रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल एवं चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी की अगुवाई मे कांग्रेसियों के साथ प्रबुद्ध वर्ग के द्वारा हाथ में काली पटटी बांधकर इन मुकदमों को राजनीतिक ठहराते हुए विरोध जताया जाने लगा। गेट पर प्रमोद व मोना के समर्थन मे नारेबाजी सुनकर सीओ कुण्डा अर्जुन सिंह पुलिस व पीएसी के साथ पहुंचे और लोगों को समझाबुझाकर शांत किया। इसके बाद विधायक मोना तथा प्रमोद तिवारी के समर्थन मे लोगों ने नेशनल हाइवे पर शांति मार्च भी निकाला। इस मौके पर आशीष उपाध्याय, छोटेलाल सरोज, अधिवक्ता शैलेंद्र मिश्र, मुनन शुक्ला, सभासद विमलेश नारायण तिवारी आदि मौजूद रहे।

नगर में स्टेट बैंक से चौक तक हटाया गया अतिक्रमण

दो दुकानों पर ठोंका गया दो हजार का जुर्माना, ठेला-गुमटी वाले भागे

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका ने शुक्रवार को नगर में स्टेट बैंक से लेकर चौक तक दोनों पटरियों पर से अतिक्रमण हटवा दिया। सड़क के किनारे पटरियों पर अतिक्रमण करने वाले दो दुकानदारों पर दो-दो हजार का जुर्माना भी ठोंका गया। इसके अलावा इस मार्ग पर लगी होर्डिंग को नगर पालिका उतारकर उठा ले गई।

बताया गया कि शुक्रवार को लगभग बारह बजे दिन में एसडीएम सदर मोहनलाल गुप्ता, सीओ सदर अभय कुमार पाण्डेय, शहर कोतवाल, अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के साथ स्टेट बैंक पहुंचे तो लोगों में हड़कंप मच गया। गुमटी-ठेला वालों में तो भगदड़ मच गई। इसका कुछ व्यापारी विरोध भी कर रहे थे कि कोरोना काल के बाद व्यापारी अभी संभल भी नहीं पाया

है और अतिक्रमण हटाने के नाम पर परेशान किया जा रहा है। अतिक्रमण हटाने गये अधिकारियों ने इन्हें समझाया गया कि अतिक्रमण न करें। उन्हें व्यापार करने से कौन रोक रहा है। लगभग दो घंटे तक चले अतिक्रमण विरोधी अभियान में जिन लोगों ने नाले-नालियां ढक लिया था और ऊपर टीन शेड डाल दिया गया था, सबके टीन शेड हटा लिये गये। इस दौरान श्रीराम तिराहे पर व्यापार मण्डल के नेताओं ने अतिक्रमण करने आये लोगों से तीखी बहस की। इस अभियान से चौक-कचहरी मार्ग चौड़ा दिखाई देने लगा। नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के साथ नगर पालिका की पूरी टीम टैक्टर, जेसीबी और मैजिक लेकर गई थी। इस टीम में सफाई एवं खाद्य निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, सफाई प्रभारी प्रशांत सिंह, आरआई लाल बहादुर व राजेश बिंद, अनिल शुक्ला, स्वच्छ भारत मिशन के वरुण मिश्र व आशीष मिश्र भी थे। नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने कहा कि अतिक्रमण विरोधी अभियान इसी तरह शहर के अन्य मार्गों पर भी चलाया जाएगा।

एक साथ उठी पिता-पुत्र की अर्थी

पट्टी, प्रतापगढ़। ट्रैक्टर की चपेट में आकर मौत का शिकार हुए पिता-पुत्र की लाश गुरुवार शाम पोस्टमार्टम के बाद घर पहुंची तो फिर कोहराम मच गया। रोते-बिलखते परिजनों ने देर शाम बेलखरनाथ घाट में पिता-पुत्र के शव का अंतिम संस्कार कर दिया। दिन भर घर पर संवेदना जताने वाले आते रहे। कंधई थानाक्षेत्र के अमहरा (गोलाही) निवासी कमलेश कुमार उर्फ कलुआ (34) बुधवार देर शाम पतनी संगीता देवी (32) और तीन वर्षीय बेटे प्रिंसू उर्फ रोशन को बाइक पर बिठाकर घर लौट रहा था। वीरमऊ के पास ट्रैक्टर की चपेट में आ गए। हादसे में कमलेश और प्रिंसू की मौत हो गई थी। जबकि उसकी पतनी संगीता गंभीर रूप से घायल हो गई। प्रयागराज के एसआरएन अस्पताल में गुरुवार को भी उसकी हालत गंभीर बनी रही।

पीबीपीजी कालेज में नई शिक्षा नीति पर हुई संगोष्ठी

शिक्षा नीति की प्रासंगिकता व उद्देश्य पर डाला गया प्रकाश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रताप बहादुर सनतकोत्तर महाविद्यालय प्रतापगढ़ सिटी के रसायन विभाग द्वारा आयोजित सांस्कृतिक परिषद के तत्वावधान में नई शिक्षा नीति-2020 विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 बृजभानु सिंह ने किया।

महाविद्यालय के सनतक एवं परासनतक के छात्र छात्राओं ने संगोष्ठी में भाग लेकर नई शिक्षा नीति के पक्ष एवम विपक्ष में अपने विचार रखे। वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता, उद्देश्य एवम उसके दूरगामी परिणामों पर छात्रों द्वारा प्रकाश डाला गया। अध्यक्षीय उदबोधन करते हुए प्राचार्य डॉ0 बृजभानु सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति राष्ट्र में समय समय पर शैक्षिक मूल्यों एवम

शैक्षणिक विषयो में सुधार हेतु लाया जाता रहा है। नई शिक्षा नीति-2020 छात्रों के सर्वांगीण विकास एवम सृजनात्मक क्षमता, मौलिकता विकसित करने में बहुत ही कारगर साबित होगी। संगोष्ठी के निर्णायक मंडल में डॉ0 नीरज त्रिपाठी, डॉ0 धर्मेन्द्र प्रताप सिंह एवम अखिलेश मोदनवाल रहे। निर्णायक मंडल द्वारा प्रथम स्थान पर एम. एससी. प्रथम वर्ष की छात्रा शिप्रा पाण्डेय, द्वितीय स्थान पर बी. ए. प्रथम वर्ष की छात्रा खुशी पांडेय तथा तृतीय स्थान पर बी.ए. द्वितीय वर्ष के छात्र अनुराग श्रीवास्तव और काजल पांडेय संयुक्त रूप से रहे। संगोष्ठी का संचालन डॉ0 भावना सिंह ने किया। इस अवसर पर डॉ0 सी0पी0पांडेय, डॉ0 के0के0सिंह, डॉ0 राजीव सिंह, डॉ0 निहारिका श्रीवास्तव आदि लोग उपस्थित रहे।

बीएसए के आश्वासन पर शिक्षक संघ का धरना स्थगित

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ का चयन वेतनमान को न स्वीकृत करने के विरोध में तृतीय दिवस भी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय के समक्ष धरना जारी रहा। धरने के मध्य में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़ शिक्षकों के मध्य आकर उन्होंने घोषणा किया कि कुल 544 पत्रावलियां है जिसमें 214 का आदेश स्वीकृत किया जा चुका है और 192 लोगों का आदेश आज देर शाम जारी कर दिया जाएगा शेष 10 अक्टूबर 2021 तक समस्त शिक्षकों के चयन वेतनमान स्वीकृत कर दिया जाएगा। इस अवसर पर धरने की अध्यक्षता कर रहे जिलाध्यक्ष रामशंकर शुक्ल व जिला मंत्री विनय सिंह ने संयुक्त रूप से सभी शिक्षकों की सहमति से चयन वेतनमान के लिए हो रहे अनिश्चित कालीन धरना को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के आश्वासन पर स्थगित कर दिया गया है।

खाते से बीस हजार निकले जाने पर पीड़ित ने एएसपी से लगाई गुहार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सेण्ट्रल बैंक आफ इण्डिया के टाईनी शाखा पर खाते से पैसा निकाल लेने का आरोप लगाते हुए पीड़ित ने एएसपी को तहरीर दी है। पीड़ित ने मामले की जांच कराकर दोषियो के खिलाफ उचित कार्रवाई की मांग की है। स्थानीय कोतवाली के शिवबोझ निवासी युवक लक्ष्मणपुर चौराहा पर सेन्ट्रल बैंक की टाइनी शाखा संचालित करता है। यह टाइनी शाखा सेन्ट्रल बैंक आफ इन्डिया शाखा लक्ष्मणपुर से जुडी है। कोतवाली के शिवबोझ निवासी शशिशेखर तिवारी ने अपर पुलिस अधीक्षक प्रतापगढ़ को तहरीर देकर आरोप लगाया है कि वह बीते तेरह जनवरी को उक्त टाइनी शाखा पर अपने खाते से दस हजार रूपये निकालने गया था। यहां टाइनी संचालक ने पीड़ित से डिवाइस पर फिंगर प्रिंट लगवाया और इसी बीच सर्वर फेल हो गया। इस पर संचालक ने पीड़ित को बताया कि आज पैसा नही निकल पायेगा। पैसा निकालने के लिए पीड़ित बीते चौबीस मई को उसी टाइनी शाखा पर पीडित फिर पैसा निकालने गया। इस बार भी दस हजार की निकासी के लिए संचालक ने डिवाइस पर फिंगर प्रिंट लिया लेकिन सर्वर फेल हो जाने की बात बताते हुए कहा कि आज भी पैसा नही निकल पायेगा। मामले की जानकारी के लिए पीडित जब सेन्ट्रल बैंक शाखा लक्ष्मणपुर से अपने बैंक खाते का स्टेटमेंट निकलवाया तो जानकारी हुई की उक्त दोनो बार उसके खाते से दो बार में कुल बीस हजार रूपये निकल चुकें है। पीडित ने घटना की जानकारी बैंक के शाखा प्रबंधक व पुलिस को दी। लेकिन कोई कार्रवाई नही हुई।

मुख्य राजस्व अधिकारी ने चार गुण्डों को किया जिला बदर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुख्य राजस्व अधिकारी ने जिन चार गुण्डों को जिला बदर किया है उनमें थाना अंतू के अंतर्गत ग्राम रामगढ़ी मोहम्मद जमील उर्फ जल्लु मोहम्मद खलील, थाना रानीगंज ग्राम सराय भरत राय नौशाद सुत ताहिर अली, थाना रानीगंज ग्राम कहला राम अभिलाष पटेल सुत राम खिलावन, थाना रानीगंज ग्राम कहला अशोक कुमार सुत राम खिलावन के नाम शामिल हैं।

व्यापारिक समस्याओं को लेकर बनी रणनीति

उद्योग व्यापार मण्डल की मासिक बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उ0प्र0 उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल की मासिक बैठक जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी की अध्यक्षता में जिला संगठन मंत्री इंद्रदेव तिवारी के प्रतिष्ठान शुभम ऑटो सेल्स, जोगापुर पर संपनन्‍ हुई। बैठक का संचालन जिला महामंत्री संजय सोनी ने किया।

बैठक में व्यापारिक समस्याओं के प्रमुख विषय बिंदुओं पर चर्चाएं हुई। उपस्थित प्रांतीय उपाध्यक्ष राम शंकर जयसवाल ने समस्त समस्याओं के निस्तारण के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों से मिलने की बात कहीं। वरिष्ठ उपाध्यक्ष लखन बाबा ने संगठन को मजबूती बनाने की दिशा में सभी व्यापारियों को एक मत होकर अपनी समस्याओं के निस्तारण के लिए अपना कदम बढ़ाने की बात कही। जिला संगठन मंत्री इंद्रदेव तिवारी ने कहा कि व्यापारियों को आने वाले चुनाव में बढ़-चढ़कर अपने प्रत्याशी उतारकर उन्हें पूर्ण समर्थन देकर विजयी बनाएं। जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी ने सभी समस्याओ और सुझाओ को सुनकर कहा कि नगरपालिका के अधिशाषी अधिकारी से अतिक्रमण अभियान रुकवाने के संबंध में बातें हुई हैं। बैठक में मुख्य रूप से संजीव

जायसवाल, सरदार महेंद्र सिंह, इफ्तेखार बॉबी, हरीश कुमार सोनी, सतीश चंद सोनी, दूधनाथ सोनी आदि मौजूद रहे।

शिक्षक निलम्बित, एक का वेतन रोका

प्रतापगढ़। विकास खण्ड बाबागंज के प्राथमिक विद्यालय धमोहन प्रथम के स0अ0 सुभाष कुमार यादव ने परिसर में निर्मित दो अतिरिक्त कक्षा-कक्षों को नियम विरुद्ध तरीके से ध्वस्त कराकर सरकारी सम्पत्ति को क्षति पहुंचाया है जिसके लिये सुभाष कुमार यादव की निलम्बन की संस्तुति कार्यालय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा की गई है। उधर विकास खण्ड लालगंज के संविलित विद्यालय गोड़वा की स0अ0 आराधना मिश्रा 13 सितम्बर से विद्यालय में बिना किसी सूचना अनुपस्थित चल रही थीं।

भैंस का वध कर उसका मांस बेंचने वाले दो गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना कुण्डा से उ0नि0 भूपेश नाथ सिंह मय हमराह देखभाल क्षेत्र/चेकिंग में थाना क्षेत्र कुण्डा के सुवंश चौराहे पर मौजूद थे कि मुखबिर खास ने सूचना दिया कि थाना क्षेत्र के रहवई में अनीश अहमद की मांस बेचने की दुकान है जिसके सामने भैंसा काटने हेतु बांधे हुये है।

इस सूचना पर उक्त पुलिस टीम तत्काल रहवई में अनीश अहमद की मांस बेचने की दुकान पर पहुंची तो देखा कि दुकान के सामने एक भैंसा बंधा हुआ हैं तथा दुकान के अन्दर दीवाल से घिरे स्थान पर एक भैंसा पड़ा था जिसका गर्दन कटा हुआ किन्तु धड़ से थोड़ा जुड़ा हुआ था तथा उसके पास में अनीश अहमद व एक और व्यक्ति मो0 गौहर खून से सने हुये चाकू लिये हुये मिले। पुलिस द्वारा मौके से पकड़े गये उक्त दोनों व्यक्तियों से की गयी। पूछताछ/जांच में ज्ञात हुआ कि इनके पास केवल मांस बेचने का लाइसेन्स है जबकि इनके द्वारा मांस बेचनें हेतु दुकान के अन्दर भैंसे का क्रूरता पूर्वक वध किया गया था। पुलिस टीम द्वारा उक्त दोनो अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया।

प्रेमिका से मिलने पहुंचे युवक को ग्रामीणों ने पीटा

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। रात में प्रेमिका से मिलने पहुंचे युवक को ग्रामीणों ने दबोच लिया और उसकी जमकर पिटाई की गई। इसको लेकर सुबह तक गांव में अफरातफरी मची रही। बाद में घटना की जानकारी पुलिस को दी गई तो पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे और उसे पकड़ कर थाने लेकर गए। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र की एक युवती का प्रेम संबंध उदईशाहपुर गांव के युवक से काफी दिनों से है। ग्रामीणों में चर्चा है कि युवक बराबर लड़की मिलने गांव में आता था।

घर-घर जाकर बताई गई सरकार की उपलब्धियाँ

निवर्तमान जिलाध्यक्ष ने ओझला ग्राम में किया जनसम्पर्क

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भाजयुमो के निवर्तमान जिलाध्यक्ष रवि गुप्ता ने भाजपा के घर घर सम्पर्क अभियान के तहत सदर विधानसभा के ओझला ग्राम सभा में घर-घर जनसंपर्क किया और उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की साढ़े चार साल की उपलब्धियों का प्रपत्र वितरित किया।

रवि गुप्ता ने लोगों से कहा कि सरकार हर वर्ग को ध्यान में रखकर काम कर रही हैं। सरकार ने जो अंत्योदय को ध्यान में रखकर काम किया है वह अद्वितीय है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की सभी योजनायें गरीब तबकों को लाभान्वित कर रही हैं। प्रदेश की योगी सरकार गरीबों के कल्याण व गरीबों की सेवा के लिए समर्पित है। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ विश्व में अपना स्थान बनाते हैं। इस दौरान भाजपा सह-मीडिया प्रभारी सिद्धार्थ सिंह रघुवर, मुनन पाल धनगर, संतोष मोदनवाल, विपिन सिंह सोमवंशी, आलोक सिंह, काशीराम सरोज, बबलू गुप्ता, पवन गुप्ता, आयुष सिंह आदि उपस्थित रहे।

जीएनएम की छात्रा से दिनदहाड़े छिनैती, हीलाहवाली मे जुटी पुलिस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जीएनएम की छात्रा के साथ स्कूल से घर लौटते समय बाइक सवार अज्ञात बदमाशों ने मारपीट तथा छिनैती की दुस्साहसिक घटना अंजाम दी। दिनदहाड़े हुई इस दुस्साहसिक घटना को लेकर तहरीर मिलने के बावजूद पुलिस खामोशी ओढ़े हुये है। सांगीपुर थाना के तारापुर निवासी रावेन्द्र वर्मा ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि उसकी बहन अर्चना वर्मा लालगंज कोतवाली के पूरे जीवन स्थित गीता पब्लिक स्कूल जीएनएम की छात्रा है। बीती उन्तींस सितंबर को दिन मे लगभग डेढ़ बजे वह स्कूल से पढ़कर पैदल घर वापस आ रही थी। स्थानीय कोतवाली के इटौरी नहर रोड पर बाइक सवार तीन अज्ञात बदमाशों ने उसकी बहन को बाइक से धक्का दे दिया। अर्चना के गिरते ही बदमाशों ने उसका पर्स तथा मोबाइल फोन छीन लिया। पीडिता के चीखने चिल्लाने पर बदमाश बाइक से भाग निकले। इस बीच एक राहगीर ने पीड़िता को लहूलुहान देख अपने फोन से घटना की सूचना परिजनों को दी। पीड़िता छात्रा के भाई ने घटना को लेकर पुलिस को तहरीर दी है।

खबर संक्षेप

ट्रक ने मारी कार को जोरदार टक्कर

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। कोखराज थाना के अंतर्गत सहजादपुर पुलिस चौकी के पास टेढ़ी मोड़ चौराहा पर कानपुर की तरफ से आ रहे कार को ट्रक चालक ने कार को पीछे से जोरदार टक्कर मार दी है जिससे कार में बैठे पांच सवारी मामूली चोटें आई हैं। ट्रक चालक मौके से फरार हो गया है। सूचना पर हल्का पुलिस मौके पर पहुंची है और ट्रक को कब्जे में लेकर उचित कार्रवाई कर रही है।

मारपीट कर किया लहूलुहान

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के लोकी पुर गांव में दबंग पिता पुत्र ने दंपत्ति को पीटकर लहूलुहान कर दिया है मामले की सूचना पीड़ित दंपत्ति ने स्थानीय पुलिस को दिया है हमले में घायल पति मोहनलाल और उसकी पत्नी उर्मिला देवी को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

डीएम ने डेगू एवं वेक्टर जनित बीमारियों से बचाव हेतु जागरूक करने के दिये निर्देश

कौशाम्बी। डीएम ने विशेष संचारी रोग नियन्त्रण अभियान की बैठक में डेगू एंव वेक्टर जनित बीमारियों से बचाव हेतु आमजन को अधिक से अधिक जागरूक किये जाने हेतु पम्पलेट वितरित करने एवं स्कूलों की दीवारों पर पेन्टिंग कराने व आशाओं के माध्यम से आमजन को जागरूक कराया जाय तथा शासन द्वारा निर्धारित सभी गतिविधियों का आयोजन किया जाय। उन्होंने डीपीआरओ को गांवो में झाड़ियों की कटाई एवं नालियों की साफ-सफाई की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित कराने के भी निर्देश दिये।

वृद्धजनों की सेवा करना बहुत ही पुण्य का कार्य : एडीएम

अखंड भारत संदेश

अन्तराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर वृद्धाश्रम ओसा में कार्यक्रम का आयोजन वृद्धजनों को किया गया सम्मानित

वृद्धाजनो को सम्मानित करते एडीएम

कौशाम्बी। अर्न्तराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर वृद्धाश्रम, ओसा में वृद्धजन सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय द्वारा वृद्धजनों को वस्त्र एवं फल वितरण किया गया तथा वृद्धजनों को शाल ओढ़ाकर उनसे आशीर्वाद भी प्राप्त किया गया।

अपर जिलाधिकारी ने कहा कि वृद्धजन हमारे धरोहर हैं। इनकी सेवा करना बहुत ही पुण्य का कार्य है। उनके द्वारा वृद्धजनों से वृद्धाश्रम की व्यवस्थाओं के विषय में भी विस्तृत जानकारी प्राप्त करने पर बताया गया कि घर से भी ज्यादा अच्छी व्यवस्था है, एवं यह वृद्धाश्रम ही अब एक मात्र हम लोगो का सहारा है। यहां पर प्रतिदिन समय-समय पर मीनू के अनुसार नाश्ता एवं भोजन उपलब्ध कराया जाता है। नियमित चिकित्सीय सुविधा भी उपलब्ध करायी जाती है। इस अवसर पर जिला समाज कल्याण अधिकारी सुधीर कुमार, वृद्धाश्रम संचालक आलोक राय एडीओ पंचायत कमलाकांत व अन्य कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

घोड़े से टकराया बाइक सवार गभीर रूप से घायल

इमामगंज कौशाम्बी। चरवा थाना के अंतर्गत महगांव के समीप घोड़े से बाइक सवार टकरा गया है।हादसे में बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया है हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर स्थानीय ग्रामीण पहुंच गए है और घायलों को इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया है बाइक सवार को काफी गहरी चोट बताया जा रहा है। हालत ज्यादा गंभीर होने पर बाइक सवार को जिला अस्पताल भेज दिया गया है जहां घायल की हालत गंभीर बताई जाती है
जानकारी के मुताबिक थाना हाथगांव क्षेत्र के लाडलेपुर ऐराया फतेहपुर निवासी संतलाल पुत्र शिवनंदन विश्वकर्मा उम्र लगभग 40 पूरामुफ्ती से पतेहपुर शादी की दावत से लौट रहे थे।तभी महगांव चौकी के पास अचानक घोड़ा सामने आ गया।बाइक की गति तेज होने के कारण वह अपनी बाइक को रोक न सका जिससे बाइक सवार घोड़े से जा टकराया। जिससे बाइक सवार जमीन पर गिर पड़ा।टक्कर इतनी तेज थी कि बाइक सवार बेशुद्ध हालत में जमीन पर गिर पड़ा।बाइक सवार को काफी गंभीर चोट आयी है।हादसे की सूचना जैसे ही ग्रामीणों को मिली तो वह घटनास्थल पर पहुंचे।हादसे की सूचना ग्रामीणों ने 108 एम्बुलेंस को दी। सूचना मिलते ही मौके पर पहुची एम्बुलेंस ने घायल को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया घायल के परिजनों को सूचना दी जहां हालत गंभीर होने पर घायल युवक को जिला अस्पताल रिफर कर दिया गया है।

बाइक से गिरी महिला घायल

घायल महिला को एंबुलेंस से अस्पताल ले जाते

इमामगंज कौशाम्बी। कोखराज थाना के अंतर्गत मूरतगंज के समीप बाइक में बैठी वृद्ध महिला की आंख लगने की वजह से वह बीच रोड पर गिर पड़ी।जिससे वृद्ध महिला को काफी गंभीर रूप से चोटें आयी है। हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर स्थानीय ग्रामीण पहुंच गए है और घायल महिला को इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया है सूत्रों के अनुसार बाइक सवार के पीछे बैठी वृद्ध महिला की काफी गहरी चोट बतायी जा रही है। जानकारी के मुताबिक वाघराय थाना क्षेत्र के खटेहरा लालगंज प्रतापगढ़ निवासी सोना देवी उम्र लगभग 70 वर्ष पत्नी माता प्रसाद प्रतापगढ़ से पूरामुफ्ती की तरफ दवा के लिए जा रहे थे तभी कोखराज थाना मूरतगंज के समीप बाइक के पीछे बैठी वृद्ध महिला की आँखे लग गयी और वह अचानक बाइक से सड़क पर गिर गयी बाइक से गिरी वृद्ध महिला को काफी गंभीर चोटें आयी है।वृद्ध महिला को जमीन पर बेशुद्ध हालत में गिरा देखकर आसपास के लोग घटनास्थल पर पहुंचे हादसे की सूचना ग्रामीणों ने 108 को फोन कर एम्बुलेंस को सूचना दी। सूचना मिलते ही मौके पर पहुची एम्बुलेंस ने घायल को स्थानीय अस्पताल मूरतगंज पी०एच०सी में भर्ती कराया जहां वृद्ध महिला का इलाज शुरू कर दिया गया है।

पराली प्रबन्धन हेतु जागरूकता गोष्ठी का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

बैठक करते जिलाधिकारी व अन्य

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में आयोजित पराली प्रबन्धन हेतु जनपद स्तरीय जागरूकता गोष्ठी में उपस्थित ग्राम प्रधानों एवं कृषक भाइयों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पराली जलाये जाने की घटनाओं की रोकथाम हेतु सुप्रीम कोर्ट के निदेर्शानुसार शासन द्वारा इस सम्बन्ध में शासनादेश जारी किये गये हैं। उन्होंने कृषक भाइयों से आग्रह किया कि वे पराली न जलायें। पराली जलाये जाने से कई दुष्परिणाम होते हैं पराली जलाये जाने से आगामी दिनों में हमारी खेती को भी क्षति हो सकती है। उन्होंने उपस्थित कृषक भाइयों से आग्रह किया कि गोष्ठी में कृषि वैज्ञानिक द्वारा पराली प्रबन्धन हेतु दी गयी विभिन्न जानकारियों को वे अपने गांवो में अन्य किसानों को भी दें तथा उन्हें जागरूक करे कि वे भी पराली न जलायें जिलाधिकारी ने उपस्थित ग्राम प्रधानों से कहा कि उनके गांव में पराली जलाये जाने की घटनायें न होने पायें, वे सतर्क होकर लगातार निगरानी करते रहें। मना करने पर भी अगर कोई व्यक्ति पराली जलाता है तो ग्राम प्रधान इसकी सूचना संबंधित अधिकारियों को अवश्य दें उन्होंने ग्राम प्रधानों से आग्रह किया कि वे लोगो को जागरूक करे पराली प्रबन्धन के विभिन तरीकों को अपनाने हेतु प्रेरित करें गोष्ठी में कृषि वैज्ञानिक केवीके डॉक्टर अजय सिंह ने कृषक भाइयों को पराली कृषि अपशिष्ट जलाने से होने वाली क्षति के विषय में विस्तार से जानकारी दी। उन्होने बताया कि पराली कृषि अपशिष्ट जलाने से उत्पन्न होने वाली जहरीली गैसों के कारण सामान्य वायु की गुणवत्ता में कमी आती है, जिससे पर्यावरण दूषित हो जाता है। दूषित वायु से आंखों में जलन एवं त्वचा रोग तथा सूक्ष्म कणों के कारण जीर्ण हृदय एवं फेफड़े की बीमारी हो जाती है मानव स्वास्थ्य में कमी के साथ-साथ कृषि भूमि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे कृषकों के खेतों में जितना उत्पादन होना चाहिए उतना उत्पादन नहीं हो पाता है। फसल अवशेष व पराली को जलाने से मिट्टी का तापमान बढ़ जाने के कारण मिट्टी की जल ग्रहण क्षमता घट जाती है। फसल अवशेषों में आग लगाने से कृषि भूमि में मौजूद मित्र कीट यथा-गोबरैला, मकड़ी, केंचुआ जल कर मर जाते है, जिसके कारण शत्रु कीटों यथा-सूड़ी, तना छेदक कीट आदि की अधिकता से फसल असुरक्षित हो जाती है कृषि अपशिष्ट/पुवाल जलाने से मिट्टी में मौजूद पादक जीवांश या ह्यूमश सूख जाते हैं जिसके कारण कृषि हेतु लाभकारी जीवाणुओं का विकास रूक जाता है व कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ाने वाले अवयव कम हो जाते है गोष्ठी में कृषि वैज्ञानिक ने कृषक भाइयो को पराली प्रबन्धन के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी पराली/कृषि अपशिष्ट को फसल अवशेष प्रबन्धन के यन्त्रों जैसे पैडी स्ट्रॉ चापर, रोटरी श्लेषर, मल्चर, सुपर सीडर के उपयोग से खती में ही काटकर जुताई करके मिट्टी में मिलायें जिससे मिट्टी में पादपों के अंश बढ़ाकर मिट्टी की उर्वरा बढ़ायी जा सके। पराली/कृषि अपशिष्ट को बेलर के मदद से बण्डल बनाकर गढ्डों मे डालें व डिकम्पोजर के छिड़काव अथवा 02 किग्रा0 यूरिया डालकर के पराली को सड़ाकर जैविक खाद बनायें व रासायनिक खादों के उपयोग से बच सकते है। फसल अवशेष वाले खेतों को गहरी जुताई करके पानी भर दें व प्रति हेक्टेयर 10 किग्रा0 यूरिया डालकर दो सप्ताह के लिए छोड़ देने पर खेतों मे पराली पूरी तरह से सड़कर मिट्टी में मिल जायेगी जिससे मिट्टी में ह्यूमन की मात्रा बढ़ने से प्रति हेक्टेयर उत्पादन निश्चित रूप से बढ़ेगा। कृषकगण ऐसे ही कम्बाइन हार्वेस्टर से अपने फसलों की कटाई करायें जिनमें फसल अवशेष प्रबन्धन के यन्त्र जैसे-एसएमएस बेलर, पैडी स्ट्रा चापर, रेक आदि यन्त्र लगें हो व कटाई के समय उपयोग किया जाता हो। इस वर्ष जनपद के कृषकों हेतु वेस्ट डिकम्पोजर निःशुल्क उपलब्ध कराये जाने हेतु 14 हजार बोतल मंगाई जा रही है जिसको पराली में छिड़काव करने के 02 दिन बाद हल्की जुताई करने से पराली सड़ जायेगी।

देश की तस्वीर बदलने के लिए हमें अपने पंचायत की बदलनी होगी तस्वीर : अमित राजूपत

अखंड भारत संदेश

दुनिया के सबसे युवा स्तम्भकार अमित राजपूत अपनी पहचान बनाने में हुए कामयाब : कल्पना सोनकर
हार्वर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड तथा इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज

वर्ल्ड रिकॉर्ड का स्वागत करती जिलापंचायत अध्यक्ष

कौशाम्बी। मंझनपुर में जिला पंचायत कार्यालय में गुरूवार को हार्वर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड तथा इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने वाले अमित राजपूत का जनपद के प्रथम आगमन पर जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने स्वागत किया है। रत्नावली सभागार में उनके आगमन के उपलक्ष्य में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया था, जिसमें जिले के काफी संख्या में लोगो ने भाग लिया है। जिला पंचायत के रत्नावली सभागार में जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर व जितेन्द्र सोनकर की अगुवाई में हार्वर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड तथा इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने वाले अमित राजपूत का पुष्पगुच्छ एवं जिला पंचायत अध्यक्ष ने मूर्ति देकर सम्मानित किया है। मंच के मध्यम से अमित राजपूत ने कहा कि समाज और देश का मौलिक परिवर्तन पंचयती राज व्यवस्था के तहत ही प्राथमिक स्तर पर सम्भव है। प्रधान और पंचायती राज व्यवस्था के नायको को चाहिए कि देश की तस्वीर बदलने के लिए हमें अपनी पंचायत की तस्वीर पहले बदलनी होगी। तभी देश बदल सकता है। साथ ही जिपं अध्यक्ष कल्पना सोनकर एवं जितेन्द्र कुमार सोनकर ने उनके बारे में बताया अमित राजपूत का परिचय भारतीय जनसंचार संस्थान से प्रशिक्षित 2014-15 बैच से प्रशितक्षित पत्रकार है। उन्होने अपनी कैरियर की शुरूआत आकाशवाणी महानिदेशालय नई दिल्ली से प्रधानमंत्री के विशेष कार्यक्रम से की थी। ब्रॉडकास्टर एवं स्तम्भकार अमित राजपूत ने विश्व रिकॉर्ड बनाया है। लंदन के हार्वर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड ने अमित राजपूत के नाम विश्व के सबसे युवा स्तम्भकार होने का रिकॉर्ड दर्ज किया है। इसी के साथ स्तम्भकार अमित राजपूत की ख्याति अंतर्राष्ट्रीय पटल पर फैल गयी है और उन्होंने दुनियाभर में भारत का मान बढ़ाया है।दिलचस्प है कि आईआईएमसी के 2014-15 बैच से प्रशिक्षित पत्रकार अमित राजपूत को न सिर्फ. हार्वर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड ने उन्हें दुनिया का सबसे युवा स्तम्भकार घोषित किया है, बल्कि इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड ने भी उनका नाम अपनी रिकॉर्ड बुक में दर्ज किया है। इस तरह इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड तथा हार्वर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराने वाले अमित राजपूत भारत और भारत के बाहर वैश्विक स्तर पर बतौर दुनिया के सबसे युवा स्तम्भकार अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुए हैं। अमित राजपूत ने नई दिल्ली स्थित भारतीय जनसंचार संस्थान से पत्रकारिता का प्रशिक्षण लेने के बाद अपने कॅरिअर की शुरूआत आकाशवाणी-दिल्ली में प्रधानमंत्री के विशेष कार्यक्रम ह्यमन की बातह्न के साथ की थी। आकाशवाणी में रहते हुए ही इन्होंने एफएम रेनबो इण्डिया तथा एफएम गोल्ड में भी अपनी सेवाएँ दीं। इसके साथ ही ये प्रसार भारती द्वारा आकाशवाणी व दूरदर्शन के बीच क्रॉस चौनल पब्लिसिटी व क्रॉस मीडिया पब्लिसिटी के गठित प्रोग्राम प्रमोशन यूनिट की स्क्रीनिंग कमेटी के सदस्य भी रहे। इसके बाद विभिन्न संस्थानों में पाँच वर्ष से अधिक समय से हाल ही तक अमित मेनस्ट्रीम मीडिया में सक्रिय रहे, किन्तु इन दिनों वह स्वतंत्र लेखन में सक्रिय हैं। आकाशवाणी से इनका जुड़ाव आज भी विभिन्न कार्यक्रमों के लेखन मसलन रेडियो रूपक, प्रोमो व नाट्य-लेखन आदि के जरिए लगातार बना हुआ है। उत्तर प्रदेश के जनपद-फतेहपुर के कस्बा खागा में जन्में अमित राजपूत की ब्रॉडकास्टर व स्तम्भकार के अलावा एक संवेदनशील लेखक और नाटककार के रूप में भी पहचान है। अंतर्वेद प्रवर, जान है तो जहान है, आरोपित एकांत तथा हाल ही में प्रकाशित हुई-कोरोनानामा इनकी चर्चित पुस्तकें हैं। रंगकर्म में गहरी दिलचस्पी रखने वाले विश्व के सबसे युवा स्तम्भकार अमित राजपूत का नाटक- अनिरुद्ध अपने मंचन से पूर्व ही लगातार चर्चा में बना हुआ है। अमित के नाम विश्व रिकॉर्ड कायम होने से आईआईएमसी परिवार ने खुशी जताई है। इस कार्यक्रम में अधिकारी सहित डा0 अरूण केसरवानी, अजय पाण्डेय, संजय भार्गव, अजय सिंह पटेल सहित काफी संख्या में लोग मौजूद रहे।

रात्रि : दुर्घटनाओं को रोकने में रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप साबित होते हैं मददगार : एआरटीओ

संयुक्त टीम ने सड़कों पर वाहनों की जांच पड़ताल के दौरान वाहनों के चालान के साथ चालकों से वसूला जुमार्ना

अझुवा कौशाम्बी। द्वितीय सड़क सुरक्षा सप्ताह 2021 कार्यक्रमग्र के सप्तम दिवस गुरुवार को पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में एआरटीओ तारकेश्वर मल्ल एवं परिवहन विभाग की टीम तथा प्रभारी निरीक्षक यातायात रविंद्र त्रिपाठी एवं यातायात पुलिस टीम द्वारा संयुक्त रुप से सड़कों पर वाहनों की चेकिंग का कार्यवाही की है इस मौके पर संयुक्त टीम ने वाहन चालकों को निर्धारित सीमा में वाहन चलाने के लिए निर्देश दिए हैं और साथ में संयुक्त टीम ने कहा कि वाहन के अभिलेखों को वाहन चालक साथ में लेकर चले और जांच के दौरान उसे जरूर दिखाए। निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप गुरुवार को महेवाघाट-भरवारी एवम मंझनपुर-सिराथू मार्ग पर वाहनों में रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप की चेकिंग करते हुए, ऐसे व्यावसायिक वाहनों में जिनमें रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप नहीं लगाए गए थे, उन वाहनों के विरुद्ध चालान की कार्यवाही संयुक्त टीम द्वारा की गई वाहनों की जांच करने के लिए निकले संयुक्त टीम द्वारा करीब 65 वाहनों में निशुल्क रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप चस्पा कराए गए। वाहन चालकों को इसके उपयोगिता अनिवार्यता के बारे में जागरूक करते हुए बताया गया की रात्रि के समय दुर्घटनाओं को रोकने में रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप काफी मददगार साबित होते हैं।इसके अतिरिक्त यातायात के नियमों के उल्लंघन पर 112 वाहन चालकों के विरुद्ध विभिन्न धाराओं में ई-चालान की कार्यवाही करते हुए, मौके पर चार वाहन चालकों से दो हजार रुपए शमन शुल्क भी टीम द्वारा वसूल किया गया।

रसोई का ताला तोड़कर चोरों ने किया गैस सिलेंडर पार

पूर्व माध्यमिक विद्यालय व जूनियर विद्यालय बमरौली सिराथू का मामला

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। सिराथू तहसील के अंतर्गत पूर्व माध्यमिक विद्यालय व जूनियर विद्यालय बमरौली सिराथू में चोरों ने प्रधानाध्यापक कार्यालय का ताला तोड़कर राखी चाभी को निकाल कर रसोई गोदाम से एक गैस सिलेंडर भरा हुआ वा एक खाली सिलेंडर एक बोरी चावल लेकर फरार हो गए है सुबह बच्चे आए तो देखा कि प्रधानाध्यापक कार्यालय व रसोई वा अन्य कमरों का ताला टूटा हुआ पड़ा था इसकी सूचना प्रधानाध्यापक व विद्यालय के अन्य अध्यापकों को छात्रों ने दिया वहीं जूनियर विद्यालय का ताला टूटा पड़ा था लेकिन कुछ सामान चोरी नहीं हुआ इसकी सूचना ग्राम प्रधान व हल्का पुलिस को दी है मौके पर पुलिस घटना की जानकारी कर रही है।

कौशांबी में जहर खुरानी का शिकार हुआ युवक

कौशाम्बी। पिपरी कोतवाली क्षेत्र के बेरासपुर गांव से होकर गुजरने वाली सड़क किनारे एक युवक स्थानीय लोगों को बेहोशी की हालत में मिला। पुलिस को सूचना देकर युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उसकी हालात नाजुक बनी हुई है। पुलिस ने युवक के पास से मिले दस्तावेजों के आधार पर उसके परिजनों को सूचना दे दी है। अस्पताल के डाकटरों के मुताबिक युवक को जहर खुरानों ने नशीला पदार्थ खिलाकर निशाना बनाया है।

लखनऊ एडमिशन लेने के लिए आया था युवक

कौशाम्बी। सराय अकिल कोतवाली क्षेत्र के बिरनेर गांव का रहने वाला मोहित कुमार 22 वर्ष पुत्र आनंदी प्रसाद लखनऊ यूनिवर्सिटी में एडमिशन लेने के लिए गया हुआ था। वह लखनऊ से प्रयागराज शुक्रवार की सुबह सिविल लाइन बस स्टेशन पर उतरा। मोहित ने दुकान से कोल्डड्रिंक लेकर पी। इसके बाद वह कौशाम्बी सराय अकिल जाने वाले वाहन में सवार हुआ। करीब 11 बजे वो बेसुध हालात में पिपरी थाना क्षेत्र के बेरासपुर गांव के पास सड़क किनारे मिला। सूचना पर पुलिस ने युवक को जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। युवक के पास से उसका सामान गायब मिला।इंस्पेक्टर पिपरी राधेश्याम वर्मा ने बताया कि घटना की सूचना पर मोहित को जिला अस्पताल इलाज के लिए भेजा गया है। पीड़ित पक्ष से तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। तहरीर मिलने के बाद कार्रवाई की जाएगी।

नाकाफी हैं जिले में मात्र 18 धान क्रय केंद्र : अजय सोनी

अखंड भारत संदेश

बैठक करते समर्थ किसान पार्टी के नेता

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के नेता अजय सोनी ने जिले भर के किसानों के धान बिक्री को लेकर विपणन विभाग द्वारा बनाए गए मात्र 18 धान क्रय केंद्रों को नाकाफी बताया है। पार्टी नेता अजय सोनी ने इस संबंध में जिला प्रशासन और खाद्य एवं विपणन विभाग के अधिकारियों से जनपद में धान उत्पादन के अनुपात में धान क्रय केंद्रों की संख्या बढ़ाने की मांग की है अन्यथा शासन को पत्र भेजकर इसकी शिकायत करने की चेतावनी दी है।

पार्टी नेता अजय सोनी के मुताबिक कौशांबी जनपद धान उत्पादन के मामले में प्रदेश में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है और यहां प्रचुर मात्रा में धान का उत्पादन होता है। वैसे भी इस साल मानसून बेहतर रहने के कारण जिले भर में धान की बंफर पैदावार होने की संभावना है। ऐसे में विभाग द्वारा पूरे जिले भर में मात्र 18 धान क्रय केंद्र बनाना निश्चित तौर पर नाकाफी हैं इससे किसानों को धान बिक्री में दिक्कत होगी। अजय सोनी के मुताबिक जिले भर में विपणन विभाग द्वारा खोले गए मात्र 18 धान क्रय केंद्रों की संख्या को बढ़ाने की जरूरत है। अजय सोनी ने जिला प्रशासन से मांग किया कि धान उत्पादन के अनुपात में जिले भर में कम से कम 30 धान क्रय केंद्र खोले जाएं। अपने पार्टी कार्यालय उदहिन बुजुर्ग में कार्यकताओं से वार्ता करते हुए अजय सोनी ने जिले भर में मात्र 18 धान क्रय केंद्र बनाने के विपणन विभाग के निर्णय पर सवाल उठाते हुए कहा कि शायद धान मिल के मालिकों की विभागीय अधिकारियों से मिलीभगत के चलते ऐसा निर्णय लिया गया है। आगे कहा कि पहले ही सरकारी आंकड़ों में सबकुछ दुरुस्त दिखाकर शासन को झूठी रिपोर्ट भेजने एवं किसानों के बजाय बड़े बड़े व्यापारियों से गुपचुप तरीके से धान क्रय कर किसानों को दरकिनार किया जाता रहा है। आगे कहा कि इतनी कम संख्या में क्रय केंद्र खोले जाने से स्थानीय स्तर पर धान क्रय केंद्र न होने पर किसान मजबूरी में व्यापारियों को धान विक्रय करने पर विवश होंगे जिसके चलते किसानों का आर्थिक शोषण होना तय है। अजय सोनी ने जिले के बड़े जनप्रतिनिधियों से भी सवाल किया कि उनकी नाक के नीचे विभागीय अधिकारी ऐसा कृत्य कर रहे हैं और उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ रहा। आगे सवाल किया कि क्या विभाग के अधिकारियों से जनपद के बड़े जनप्रतिनिधियों एवं सत्ता से जुड़े नेताओं की मिलीभगत से ऐसा किया जा रहा है या कुछ और बात है। अब ऐसे में किसानो की आय साल 2022 तक दुगुनी करने की भाजपा सरकार की मंशा कैसे फलीभूत होगी, यह बड़ा ही शोचनीय विषय है। अजय सोनी ने जिला प्रशासन एवं खाद्य एवं विपणन विभाग के अधिकारियों से मांग किया कि इस साल धान की बन्फर पैदावार को देखते हुए जल्द ही जिले में धान क्रय केंद्रों की संख्या बढ़ाई जाय नहीं तो शासन को पत्र भेजकर इसकी शिकायत की जाएगी और विभाग का घेराव किया जाएगा। इस अवसर पर सुरजीत वर्मा, सुरेश तिवारी, नर्मदा प्रसाद यादव, मानसिंह पटेल, राम मनोहर सरोज, बाबू लाल लोधी, सोनी मौर्य, पुष्पा सोनकर, मालती सिंह आदि मौजूद रहे।

बौखलाए डॉक्टर ने महिला अधिकार संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष को दी धमकी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। चायल तहसील क्षेत्र के तिल्हापुर मोड़ में गणेश हॉस्पिटल में इलाज के दौरान लगातार मरीजों की मौत से बौखलाए डॉक्टर ने महिला अधिकार संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजू पाठक को फोन कर जान से मारने की धमकी दी बताते चलें कि मरीजों से इलाज के दौरान अधिक धनादोहन के चक्कर में मौत देने वाले इस कथित डॉक्टर के अस्पताल में कई मरीजों की मौत हो चुकी है मौत के सौदागर डॉक्टर के खिलाफ स्वास्थ्य विभाग ने जॉच शुरू करा दी है अस्पताल तीन बार सीज हो चुका है इसके अलावा मौत के सौदागर इस डॉक्टर के विरुद्ध पिपरी थाने में गम्भीर धाराओं में मुकदमा भी दर्ज है मुकदमे में थानेदार ने मुचलका पर डॉक्टर को रिहा कर दिया है जिससे डॉक्टर का हौसला बुलंद है दुसरी तरफ लगातार जांच से बौखलाहट में डॉक्टर लोगों को धमकी दे रहा है इसी बौखलाहट में डॉक्टर ने महिला अधिकार संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजू पठाज को भी जान से मारने की धमकी दी है डॉक्टर के मामले को लेकर महिला अधिकार संगठन के सदस्यों में भारी रोष है और वह कभी भी जिले में बड़ा आंदोलन कर आरोपी डॉक्टर पर धमकी का मुकदमा और मरीज की मौत के आरोपी डॉक्टर की गिरफ्तारी की मांग कर सकती हैं।

मौत का खेल खेलने वाली अस्पताल संचालिका लगातार दे रही जान से मारने की धमकी

कौशाम्बी। महिला अधिकार संगठन की जिलाध्यक्ष अंजना मिश्रा को तिल्हापुर मोड़ स्थित गणेश हॉस्पिटल की कथित डॉक्टर प्रबंधक बताने वाली महिला ने बुधवार को लगभग 8:00 बजे फोन करके तमाम तरह से धमकियां दे रही हैं और कथित प्रबंधक अपने गुर्गों से जान से मारने की धमकियां दिलवा रही हैं। गणेश हॉस्पिटल की संचालिका महिला डॉक्टर का अंजना मिश्रा से कहना है कि मैं तुम्हें देख लूंगी। धमकी देने वाली महिला डॉक्टर का मोबाइल नंबर 8957503378 है जिससे लगातार धमकी देकर लोगों पर दबाव बनाया जा रहा है जिससे उसके गुनाहों का पर्दा उजागर ना हो सके। बताया जाता है कि गणेश हॉस्पिटल के डॉक्टर संचालक के कारनामे के चलते कई मरीजों की इलाज के दौरान मौत हो गई है। डॉक्टर पर मुकदमा भी पिपरी थाने में दर्ज है। अवैध तरीके से संचालित इस अस्पताल के कृत्य की मुख्य अधिकारी द्वारा टीम गठित कर जांच कराई जा रही है। इलाज में मरीजो की मौत के मामले में भी मुख्य चिकित्सा अधिकारी गंभीर है और मौत का धंधा करने वाले इस अस्पताल को तीन बार सीज किया जा चुका है, लेकिन अस्पताल संचालक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा लगाया गया ताले को तोड़ दिया है और अस्पताल का संचालन फिर शुरू कर दिया है।

सम्पादकीय

दुविधा में फंसी कांग्रेस

पांच महीने बाद जिस राज्य में चुनाव होने वाले हों, वहां सत्तारूढ़ दल के अंदर इस तरह की अनिश्चितता पार्टी नेतृत्व की घोर असफलता ही कही जाएगी। हालांकि लंबे समय से कुछ न करने का आरोप झेलने वाले कांग्रेस नेतृत्व ने पिछले दिनों कुछ ठोस फैसले लेकर पॉजिटिव संदेश दिया था। पंजाब में मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चननी और नवजोत सिंह सिद्धू के बीच गुरुवार को हुई लंबी बैठक भी कोई नतीजा नहीं दे सकी। वैसे विवाद सुलटाने की कोशिश अभी जारी है लेकिन हकीकत यही है कि पंजाब में कांग्रेस अपनी ही बनाई गुत्थी में कुछ इस तरह उलझ गई है कि उससे निकलते नहीं बन रहा। नए मुख्यमंत्री चननी के फैसलों पर प्रदेश पार्टी अध्यक्ष सिद्धू ने जिस तरह से प्रतिक्रिया दी, उसके बाद यह समझना मुश्किल है कि कैसे दोनों आपस में तालमेल बनाकर चलेंगे और उसे उसूलों पर समझौता नहीं मानेंगे। उधर, कैप्टन अमरिंदर सिंह ने यह तो साफ कर दिया कि वह बीजेपी में शामिल नहीं हो रहे हैं, लेकिन इसके साथ ही पार्टी छोड़ने का इरादा भी जाहिर कर दिया। उन्हें मनाने की कवायद चल रही है, पर तय नहीं है कि ऊंट आखिरकार किस करवट बैठेगा। पांच महीने बाद जिस राज्य में चुनाव होने वाले हों, वहां सत्तारूढ़ दल के अंदर इस तरह की अनिश्चितता पार्टी नेतृत्व की घोर असफलता ही कही जाएगी। हालांकि लंबे समय से कुछ न करने का आरोप झेलने वाले कांग्रेस नेतृत्व ने पिछले दिनों कुछ ठोस फैसले लेकर पॉजिटिव संदेश दिया था।

पंजाब में कैप्टन अमरिंदर सिंह के विरोध के बावजूद सिद्धू को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनाना, अच्छी-खासी दलित आबादी वाले राज्य को पहला दलित सीएम देना और कन्हैया कुमार, जिगन्श मेवानी के रूप में मास अपील वाले युवा नेताओं को प्रवेश देना ऐसे फैसले हैं, जिनके पक्ष-विपक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि ये खास सोच के साथ लिए गए ठोस फैसले हैं। मगर खास सोच के साथ लिए जाने वाले फैसलों का भी फायदा तभी मिलता है, जब उसे पूरी तैयारी के साथ और उपयुक्त ढंग से लागू किया जाए। कम से कम पंजाब के मामले में इसकी इतनी कमी रही कि घोषणा के बाद से ही इन फैसलों के साइड इफेक्ट नेगेटिव रूप में सामने आने लगे। पिछले दो महीनों के दौरान सिद्धू ने जिस तरह का व्यवहार किया है, उसका बचाव करना उनके समर्थकों के लिए भी मुश्किल है। जाहिर है, यह सवाल उठेगा कि राज्य में पार्टी का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंपने से पहले उनकी काबिलियत परखने का कौन सा तरीका पार्टी हाईकमान ने अपनाया था। गुलाम नबी आजाद और कपिल सिब्बल जैसे वरिष्ठ नेताओं ने जो कुछ कहा है, उसके पीछे इन सवालों से उपजी बेचैनी महसूस की जा सकती है। इस बेचैनी को नजरअंदाज करना या इसे पार्टी विरोधी गतिविधियों की श्रेणी में डालने की कोशिश करना आत्मघाती होगा। देश की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी खुद को एक पूर्णकालिक, जिम्मेदार और पारदर्शी नेतृत्व से वंचित नहीं रख सकती। पार्टी के सामने चुनौतियां तो अलग-अलग तरह की आती रहेंगी, फैसले भी कुछ सही और कुछ गलत होते रहेंगे, लेकिन सवीच्च स्तर पर नेतृत्वहीनता की स्थिति पार्टी को कहीं का नहीं छोड़ेगी।

क्या हेल्थ कार्ड हमारी जिंदगी बदल पाएगा जानें कैसे इलाज के तरीके का हो जाएगा कायापलट

देवी शेट्टी

अगर अमेरिका के किसी अस्पताल में एक रात 200 मरीज भर्ती होते हैं तो उनमें से एक की मौत हो सकती है। लापरवाही के चलते नहीं, इलाज में गड़बड़ी की वजह से। अमेरिकी अस्पतालों को दुनिया में सबसे सुरक्षित माना जाता है, इसके बावजूद वहां उनमें भर्ती होने में स्काई डाइविंग के मुकाबले दस गुना ज्यादा जोखिम है। हमें अस्पतालों को मरीजों के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाने की जरूरत है। जब हम अपने किसी करीबी को अस्पताल में भर्ती कराते हैं तो क्यों बार-बार पूछताछ करते हैं कि कौन सा डॉक्टर मरीज को देखने वाला है हवाई जहाज पर चढ़ते हुए पायलट के अनुभव को लेकर कभी पूछताछ क्यों नहीं करते इसका जवाब हेल्थकेयर सेक्टर और एविएशन इंडस्ट्री द्वारा अपनाई गई कार्य प्रक्रियाओं के अंतर में निहित है। हेल्थकेयर इंडस्ट्री के विपरीत, कोई भी पायलट टेकऑफ, लैंडिग या क्रूजिंग की अपनी खास शैली नहीं अपना सकता। पायलटों को निर्धारित प्रोटोकॉल का पूरी सख्ती से पालन करना होता है। कॉकपिट में उनकी हर गतिविधि, एक-एक चाल, हर बातचीत रेकॉर्ड की जाती है, जो 'ब्लैकबॉक्स' में दर्ज होती रहती है। प्लेन क्रैश होने की स्थिति में हर छोटे-बड़े ब्योरे को देखा, समझा और परखा जाता है। अगर हादसे के पीछे किसी तरह की मानवीय भूल का पता चले तो वह भविष्य के लिए सबक होता है। मूलतः टेकन्लॉजी और प्रोटोकॉल का जोड़ ही है, जिस पर सख्ती से अमल ही एविएशन इंडस्ट्री को दुनिया की सबसे सेफ इंडस्ट्री बनाता है।

दुर्भाग्यवश हेल्थकेयर में इलाज के प्रोटोकॉल का पालन करना कठिन है क्योंकि भारत सहित विकासशील देशों के 90 फीसदी अस्पतालों में इलेक्ट्रॉनिक मेडिकल रेकॉर्ड्स (ईएमआर) की व्यवस्था नहीं है। ईएमआर के जरिए अस्पताल के भीतर इलाज के दौरान मरीजों, मशीनों, नर्सों, टेकिन्कल कर्मचारियों और डॉक्टरों के बीच चलने वाली तमाम गतिविधियों को मोबाइल प्लैटफॉर्म पर रियल टाइम रेकॉर्ड करते चलना आसान होता है। फिलवक्त किसी मरीज की हालत गंभीर होने पर यह पता करना बहुत मुश्किल होता है कि आखिर गड़बड़ी कहां हुई, घटनाक्रम क्या रहा, क्यों स्थितियां बिगड़नी शुरू हुईं। बेडसाइड पेपर रेकॉर्ड में डीटेल इतने कम होते हैं कि उनके विश्लेषण से कोई सटीक निष्कर्ष निकालना संभव नहीं होता। किसी भी कॉम्प्लिकेशन के कारणों की तह तक पहुंचने में असमर्थता डॉक्टरों को ही नहीं सिविल सोसाइटी को भी परेशान कर रही है। सितंबर 2018 में उत्तराखंड हाईकोर्ट ने निर्देश दिया कि राज्य में कोई भी डॉक्टर कागज पर दवाएं प्रिस्क्राइब नहीं करेगा। प्रिस्क्रिप्शन की गड़बडि़यों से बचने के लिए उनसे कहा गया है कि वे सब डिजिटल प्रिस्क्रिप्शन को अपनाएं। दुर्भाग्यवश उस आदेश पर अमल सुनिश्चित करने लायक डिजिटल टूल्स तब उपलब्ध ही नहीं थे। लेकिन आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ मिशन लॉन्च होने के बाद स्थितियां बदलने वाली हैं। अगर हम डॉक्टरों, नर्सों और टेकिन्कल कर्मचारियों को कागज और पेन के बदले डिजिटल टूल्स उपलब्ध कराने लगें तो हेल्थकेयर के दौरान मरीजों की मौतों की संख्या में अच्छी खासी कमी लाई जा सकती है, हेल्थकेयर सुविधाओं तक लोगों की पहुंच जबर्दस्त ढंग से बढ़ाई जा सकती है और इलाज में होने वाला खर्च भी काफी कम किया जा सकता है। आज मरीजों के बेडसाइड पेपर रेकॉर्ड के जरिए सटीक क्लिनिकल डायगनेसिस के लिए जरूरी मेडिकल डेटा हासिल करना डॉक्टरों के लिए बहुत बड़ा सिरदर्द होता है। डॉक्टर दबाव में होते हैं कि कोई ऐसी मानवीय भूल न हो जाए, जिससे मरीज की जिंदगी प्रभावित हो। डॉक्टर बिरादरी के इनपुट के सहारे अच्छी तरह तैयार किया गया ईएमआर ही मरीजों का इलाज करने का उनवा आनंद वापस लौटा सकता है। यहां सवाल उठता है कि अगर ईएमआर हेल्थकेयर का कायापलट कर सकता है तो फिर अमेरिकी अस्पताल आज भी सेफ्टी के मामले में संघर्ष करते क्यों नजर आते हैं इसका कारण यह है कि अमेरिका में ईएमआर को मूलतः बिलिंग सॉफ्टवेयर के रूप में विकसित करने पर अरबों रुपये फूंक दिए गए। मेडिकल फीचर्स जोड़ने का ख्याल बाद में आया। आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ मिशन भारतीय डिजिटल हेल्थ स्टार्टअप्स के लिए संभावनाओं के नए द्वार खोलेगा। इस मिशन से जरा सा इशारा पाकर देश के तमाम अस्पताल ईएमआर की व्यवस्था कर लेंगे। एक अदद हेल्थ आईडी पेशंट्स के लिए अपना पूरा हेल्थ रेकॉर्ड मोबाइल में सेव रखना आसान बना देगा, जो देश के किसी भी कोने में डॉक्टरों द्वारा अपने लैपटॉप पर देखा जा सकेगा। डॉक्टर हर विजिट में पेशंट से एलर्जी, फैमिली हिस्ट्री और पास्ट मेडिकल रेकॉर्ड से जुड़े वही-वही सवाल पूछना बंद कर देंगे। सिरदर्द से लेकर कैंसर तक हर मेडिकल समस्या को लेकर डॉक्टर से पहला इंटरएक्शन ऑनलाइन होगा। झंझट भरे हॉस्पिटल दौरों के बजाय डॉक्टरों से ऑनलाइन संपर्क निश्चित रूप से काफी सुविधाजनक होगा। ब्लड टेस्ट, सीटी स्कैन, एमआरआई, अल्ट्रासाउंड- सबकी रिपोर्टें क्लाउड पर उपलब्ध होंगी, सो मरीज को बार-बार वही टेस्ट करवाने के झंझट से नहीं गुजरना पड़ेगा।जल्दी ही डेटा एनालिटिक्स ईएमआर पर क्लिनिकल डिसीजन सपोर्ट सिस्टम बना देंगे, जिससे पेशंट की स्थितियों को देखते हुए वैकल्पिक डायगनेसिस उतनी ही आसान हो जाएगी जितना कि ऑनलाइन सेकंड ओपिनियन देना। झोला छाप डॉक्टरों से पिंड अपने आप छूट जाएगा क्योंकि सिर्फ रजिस्टर्ड डॉक्टर ही डिजिटल पैड पर प्रिस्क्रिप्शन दे सकेंगे। डिजिटाइजेशन ने हर इंडस्ट्री का कायापलट कर दिया है। दुनिया की सबसे बड़ी टैक्सी कंपनी ऊबर के पास अपनी कोई गाड़ी नहीं है। दुनिया की सबसे लोकप्रिय डिजिटल मीडिया कंपनी फेसबुक खुद कोई कंटेंट नहीं क्रिएट करती। दुनिया की सबसे बड़ी रिटेलर कंपनी अलीबाबा के पास अपना कोई सामान नहीं होता। ऐसे ही दुनिया की सबसे बड़ी हेल्थकेयर प्रोवाइडर कंपनी के पास अपना कोई बेड नहीं होगा क्योंकि वह एक हेल्थऐप होगी। हमारे टेकसैवी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रोत्साहन से वह हेल्थऐप भारत के प्रतिभाशाली सॉफ्टवेयर इंजीनियरों द्वारा विकसित की जाएगी। बाकी दुनिया के सामने उस यंग, स्मार्ट, इन्ट्यूटिव अपील वाले हेल्थऐप को अपनाने के सिवा और कोई विकल्प नहीं होगा।

विपक्षी एकता कहीं ख्याली पुलाव तो नहीं

नरेंद्र नाथ

पिछले कुछ महीनों से 2024 आम चुनावों में बीजेपी से मुकाबले के लिए विपक्षी दलों की एकता की कोशिश चल रही थी। इसके लिए एक के बाद एक कई मीटिंग भी हुई। ऐसा संदेश गया कि विपक्षी दल पिछली गलतियों से सीख लेते हुए इस बार एक मंच पर आएंगे और आपसी मतभेद दूर करेंगे। लेकिन अभी विपक्षी एकता कोई आकार लेती कि पिछली बार की तरह ही फिर यह पटरी से उतरती दिखने लगी। हालांकि इस बार इसके पीछे कारण थोड़े अलग हैं। अभी तक विपक्षी एकता में नेतृत्व को लेकर सबसे अधिक विवाद होता था। लेकिन इस बार विपक्षी दलों की आपस में ही सेंधमारी होने लगी। जिस तरह समान विचारधारा वाले विपक्षी दल दूसरे दलों के नेताओं को अपने पाले में करने लगे हैं, उससे विपक्षी एकता की कोशिश फिलहाल विपक्ष बनाम विपक्ष की सियासी जंग में बदल गई है। टीएमसी कांग्रेस नेताओं को अपने पाले में कर रही है। कांग्रेस लेफ्ट नेताओं को शामिल कर रही है। आपस में पाले बदलने का ट्रेंड अभी रुकता भी नहीं दिख रहा है। इससे दलों के बीच कटुता भी सामने आई है। जहां महज कुछ दिनों पहले विपक्षी एकता के लंबे-चौड़े दावे हो रहे थे, अब बयानों में तल्खी है। अब तो सवाल यह पूछा जा रहा है कि विपक्ष बनाम विपक्ष की जंग कहां तक जाएगी एकता की बातों के बीच ऐसी नौबत क्यों आई क्षेत्रीय दल विपक्षी एकता में जारी इस जंग के लिए कांग्रेस को ही जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। उनका मानना है कि पिछले कुछ सालों से कांग्रेस के गिरते ग्राफ से हालात बदल गए हैं, जिसे कांग्रेस समझ नहीं पा रही है। क्षेत्रीय दल कांग्रेस की निष्क्रियता को जिम्मेदार ठहराते हैं। उनका मानना है कि कई राज्यों में कांग्रेस बीजेपी को टक्कर नहीं दे रही है, ऐसे में विपक्ष का स्पेस किसी न किसी को तो लेना ही होगा। पूर्वोत्तर भारत के एक क्षेत्रीय दल के सीनियर नेता ने एनबीटी को बताया कि दो सालों में अब तक पार्टी एक पूर्णकालिक अध्यक्ष ही नहीं चुन पाई है। उन्होंने कहा कि आपसी गुटबाजी अलग बात है, पार्टी धरातल पर गंभीर नहीं दिखती है। नेताओं ने कहा कि बाहर ही नहीं, बल्कि कांग्रेस के अंदर भी इस बात को लेकर बेचैनी है। ऐसे में अब क्षेत्रीय दलों का मानना है कि 2021 में कांग्रेस की स्थिति 2004 वाली नहीं रही और विपक्ष की ताकत का नए सिरे से गठन होना चाहिए, उन्हें स्पेस मिलना चाहिए। वहीं आम आदमी पार्टी, टीएमसी जैसे दलों को यह भी लगने लगा है कि यही मौका है जब वे अपनी पार्टी का विस्तार कर सकते हैं।

उधर कांग्रेस को लगता है कि क्षेत्रीय दल अति महत्वाकांक्षा का शिकार हो रहे हैं, और वे जो कर रहे हैं उससे आखिरकार बीजेपी को ही फायदा होगा। कांग्रेस नेताओं का तर्क है कि विपक्षी एकता का मतलब यह नहीं है कि वे अपनी जमीन बाकी दलों को दे दें। लेकिन कांग्रेस भी इस खेल में शामिल है। लेफ्ट नेता कन्हैया को तब दल में शामिल किया गया, जब सीपीआई नेता डी. राजा पार्टी से यह फैसला नहीं लेने का आग्रह कर रहे थे। वहीं कन्हैया के शामिल होने से न सिर्फ लेफ्ट दलों से, बल्कि बिहार में आरजेडी से भी कांग्रेस के रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। सूत्रों के अनुसार पप्पू यादव को भी कांग्रेस शामिल कर सकती है, जिनका आरजेडी से विरोध है। उसी तरह टीएमसी ने गोवा, त्रिपुरा, असम और मेघालय में कांग्रेस के कुछ सीनियर नेताओं को अपने पाले में किया, तो अभी कई नेताओं के उनके संपर्क में रहने की भी बात कही जा रही है। इन राज्यों में टीएमसी भी चुनाव में उतरेगी। आम आदमी पार्टी दिल्ली के अलावा उत्तराखंड, पंजाब, गुजरात सभी जगह कांग्रेस का स्पेस ले रही है। अभी जो संकेत मिल रहे हैं उनके हिसाब से अगले कुछ दिनों में तनातनी और भी बढ़ सकती है। इसका असर विपक्षी दलों की एकता पर पड़ सकता है।तो क्या विपक्षी एकता की कोशिश अब पूरी तरह से बेपटरी हो जाएगी नेताओं का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगा। विपक्षी दलों के नेताओं के अनुसार अभी इस मसले पर तनातनी जरूर दिख सकती है, लेकिन इसका असर विपक्षी एकता पर नहीं दिखेगा। उन्होंने कहा कि हर पार्टी अपने संगठन को मजबूत करना चाहती है, उसका विस्तार करना चाहती है। इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन 2024 में बीजेपी के सामने इनके लिए एक होने का विकल्प नहीं होगा, बल्कि यह सबकी मजबूरी होगी। ऐसे में वे कुछ महीनों तक खुद को विस्तार देकर एक बार फिर विपक्षी एकता की कोशिश में लग सकते हैं। वहीं अगले साल फरवरी-मार्च में पांच राज्यों के चुनाव परिणाम भी कोई न कोई दिशा तो लेंगे ही।

विपक्षी एकता कहीं ख्याली पुलाव तो नहीं

नरेंद्र नाथ

पिछले कुछ महीनों से 2024 आम चुनावों में बीजेपी से मुकाबले के लिए विपक्षी दलों की एकता की कोशिश चल रही थी। इसके लिए एक के बाद एक कई मीटिंग भी हुई। ऐसा संदेश गया कि विपक्षी दल पिछली गलतियों से सीख लेते हुए इस बार एक मंच पर आएंगे और आपसी मतभेद दूर करेंगे। लेकिन अभी विपक्षी एकता कोई आकार लेती कि पिछली बार की तरह ही फिर यह पटरी से उतरती दिखने लगी। हालांकि इस बार इसके पीछे कारण थोड़े अलग हैं। अभी तक विपक्षी एकता में नेतृत्व को लेकर सबसे अधिक विवाद होता था। लेकिन इस बार विपक्षी दलों की आपस में ही सेंधमारी होने लगी। जिस तरह समान विचारधारा वाले विपक्षी दल दूसरे दलों के नेताओं को अपने पाले में करने लगे हैं, उससे विपक्षी एकता की कोशिश फिलहाल विपक्ष बनाम विपक्ष की सियासी जंग में बदल गई है। टीएमसी कांग्रेस नेताओं को अपने पाले में कर रही है। कांग्रेस लेफ्ट नेताओं को शामिल कर रही है। आपस में पाले बदलने का ट्रेंड अभी रुकता भी नहीं दिख रहा है। इससे दलों के बीच कटुता भी सामने आई है। जहां महज कुछ दिनों पहले विपक्षी एकता के लंबे-चौड़े दावे हो रहे थे, अब बयानों में तल्खी है। अब तो सवाल यह पूछा जा रहा है कि विपक्ष बनाम विपक्ष की जंग कहां तक जाएगी

एकता की बातों के बीच ऐसी नौबत क्यों आई क्षेत्रीय दल विपक्षी एकता में जारी इस जंग के लिए कांग्रेस को ही जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। उनका मानना है कि पिछले कुछ सालों से कांग्रेस के गिरते ग्राफ से हालात बदल गए हैं, जिसे कांग्रेस समझ नहीं पा रही है। क्षेत्रीय दल कांग्रेस की निष्क्रियता को जिम्मेदार ठहराते हैं। उनका मानना है कि कई राज्यों में कांग्रेस बीजेपी को टक्कर नहीं दे रही है, ऐसे में विपक्ष का स्पेस किसी न किसी को तो लेना ही होगा। पूर्वोत्तर भारत के एक क्षेत्रीय दल के सीनियर नेता ने एनबीटी को बताया कि दो सालों में अब तक पार्टी एक पूर्णकालिक अध्यक्ष ही नहीं चुन पाई है। उन्होंने कहा कि आपसी गुटबाजी अलग बात है, पार्टी धरातल पर गंभीर नहीं दिखती है। नेताओं ने कहा कि बाहर ही नहीं, बल्कि कांग्रेस के अंदर भी इस बात को लेकर बेचैनी है। ऐसे में अब क्षेत्रीय दलों का मानना है कि 2021 में कांग्रेस की स्थिति 2004 वाली नहीं रही और विपक्ष की ताकत का नए सिरे से गठन होना चाहिए, उन्हें स्पेस मिलना चाहिए। वहीं आम आदमी पार्टी, टीएमसी जैसे दलों को यह भी लगने लगा है कि यही मौका है जब वे अपनी पार्टी का विस्तार कर सकते हैं। उधर कांग्रेस को लगता है कि क्षेत्रीय दल अति महत्वाकांक्षा का शिकार हो रहे हैं, और वे जो कर रहे हैं उससे आखिरकार बीजेपी को ही फायदा होगा। कांग्रेस नेताओं का तर्क है कि विपक्षी एकता का मतलब यह नहीं है कि वे अपनी जमीन बाकी दलों को दे दें। लेकिन कांग्रेस भी इस खेल में शामिल है। लेफ्ट नेता कन्हैया को तब दल में शामिल किया गया, जब सीपीआई नेता डी. राजा पार्टी से यह फैसला नहीं लेने का आग्रह कर रहे थे। वहीं कन्हैया के शामिल होने से न सिर्फ लेफ्ट दलों से, बल्कि बिहार में आरजेडी से भी कांग्रेस के रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। सूत्रों के अनुसार पप्पू यादव को भी कांग्रेस शामिल कर सकती है, जिनका आरजेडी से विरोध है। उसी तरह टीएमसी ने गोवा, त्रिपुरा, असम और मेघालय में कांग्रेस के कुछ सीनियर नेताओं को अपने पाले में किया, तो अभी कई नेताओं के उनके संपर्क में रहने की भी बात कही जा रही है। इन राज्यों में टीएमसी भी चुनाव में उतरेगी। आम आदमी पार्टी दिल्ली के अलावा उत्तराखंड, पंजाब, गुजरात सभी जगह कांग्रेस का स्पेस ले रही है। अभी जो संकेत मिल रहे हैं उनके हिसाब से अगले कुछ दिनों में तनातनी और भी बढ़ सकती है। इसका असर विपक्षी दलों की एकता पर पड़ सकता है।

तो क्या विपक्षी एकता की कोशिश अब पूरी तरह से बेपटरी हो जाएगी नेताओं का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगा। विपक्षी दलों के नेताओं के अनुसार अभी इस मसले पर तनातनी जरूर दिख सकती है, लेकिन इसका असर विपक्षी एकता पर नहीं दिखेगा। उन्होंने कहा कि हर पार्टी अपने संगठन को मजबूत करना चाहती है, उसका विस्तार करना चाहती है। इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन 2024 में बीजेपी के सामने इनके लिए एक होने का विकल्प नहीं होगा, बल्कि यह सबकी मजबूरी होगी। ऐसे में वे कुछ महीनों तक खुद को विस्तार देकर एक बार फिर विपक्षी एकता की कोशिश में लग सकते हैं। वहीं अगले साल फरवरी-मार्च में पांच राज्यों के चुनाव परिणाम भी कोई न कोई दिशा तो लेंगे ही। जाहिर है कि वे मौजूदा तनातनी के बाद भी विपक्षी एकता की कोशिश को खारिज नहीं करते हैं।वे यह भी समझते हैं कि क्षेत्रीय दल कितने भी एकजुट हो जाएं, अगर कांग्रेस ने अपनी स्थिति नहीं सुधारी तो इस लड़ाई का कोई मतलब नहीं। इसके पीछे तर्क यह है कि 2019 आम चुनाव में लगभग 225 लोकसभा सीटों पर कांग्रेस-बीजेपी का सीधा मुकाबला हुआ, जिनमें 200 से अधिक सीटें बीजेपी ने जीतीं। ऐसी परिस्थिति बनी रही तो उनके एक होने का भी अधिक लाभ नहीं होगा और वे बीजेपी को नहीं रोक सकते हैं। ऐसे में उनका फोकस गढ़ बचाने पर ही अधिक रह सकता है और उनके विस्तार प्लान को ब्रेक लग सकता है। वहीं कांग्रेस को भी अहसास है कि उसकी ताकत इतनी नहीं है कि बीजेपी से मुकाबला कर सके। गठबंधन उसके लिए मजबूरी है। जाहिर है, आने वाले समय में विपक्षी एकता की रेल तो हमेशा की तरह चलती रहेगी, लेकिन फिलहाल यह बेपटरी जरूर होती दिख रही है।

दक्षेस अपनी सार्थकता सिद्ध नहीं कर पाया, अब जन-दक्षेस बनना चाहिए

सरकारें लड़ती-झगड़ती रहें तो भी लोगों के बीच बातचीत जारी रहे। यह इसलिए जरूरी है कि दक्षिण और मध्य एशिया के 16-17 देशों के लोग एक ही आर्य परिवार के हैं। उनकी भाषा, भूषा, भोजन, भजन और भेषज अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन उनकी संस्कृति एक ही है। दक्षेस (सार्क) के विदेश मंत्रियों की जो बैठक न्यूयार्क में होने वाली थी, वह स्थगित हो गई है। उसका कारण यह बना कि अफगान सरकार का प्रतिनिधित्व कौन करेगा सच पूछा जाए तो 2014 के बाद दक्षेस का कोई शिखर सम्मेलन वास्तव में हुआ ही नहीं। 2016 में जो सम्मेलन इस्लामाबाद में होना था, उसका आठ में से छह देशों ने बहिष्कार कर दिया था, क्योंकि जम्मू में आतंकवादियों ने उन्हीं दिनों हमला कर दिया था। नेपाल अकेला उस सम्मेलन में सम्मिलित हुआ था, क्योंकि नेपाल उस समय दक्षेस का अध्यक्ष था और काठमांडो में दक्षेस का कार्यालय भी है। दूसरे शब्दों में इस समय दक्षेस बिल्कुल पंगु हुआ पड़ा है। यह 1985 में बना था लेकिन अब 35 साल बाद भी इसकी ठोस उपलब्धियां नगण्य ही हैं, हालांकि दक्षेस-राष्ट्रों ने मुक्त व्यापार, उदार वीजा-नीति, पर्यावरण-रक्षा, शिक्षा, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में परस्पर सहयोग पर थोड़ी बहुत प्रगति जरूर की है लेकिन हम दक्षेस की तुलना यदि यूरोपीय संघ और 'आसियान' से करें तो वह उत्साहवर्द्धक नहीं है। फिर भी दक्षेस की उपयोगिता से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसे फिर से सक्रिय करने का भरसक प्रयत्न जरूरी है। जिन दिनों 'सार्क' यानि 'साउथ एशियन एसोसिएशन ऑफ रीजनल कोऑपरेशन' नामक संगठन का निर्माण हो रहा था तो इसका हिंदी नाम 'दक्षेस' मैंने दिया था। 'नवभारत टाइम्स' के एक संपादकीय में मैंने 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ' का संक्षिप्त नाम 'दक्षेस' बनाया था। उस समय यानि अब से लगभग 40 साल पहले भी मेरी राय थी कि दक्षेस के साथ-साथ एक जन-दक्षेस संगठन भी बनना चाहिए यानि सभी पड़ोसी देशों के समान विचारों वाले लोगों का संगठन होना भी बहुत जरूरी है।

सरकारें आपस में लड़ती-झगड़ती रहें तो भी उनके लोगों के बीच बातचीत जारी रहे। यह इसलिए जरूरी है कि दक्षिण और मध्य एशिया के 16-17 देशों के लोग एक ही आर्य परिवार के हैं। उनकी भाषा, भूषा, भोजन, भजन और भेषज अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन उनकी संस्कृति एक ही है। अराकान (म्यांमार) से खुरासान (ईरान) और त्रिविष्टुप (तिब्बत) से मालदीव के इस प्रदेश में खनिज संपदा के असीम भंडार भरे हुए हैं। यदि भारत चाहे तो इन सारे पड़ोसी देशों को कुछ ही वर्षों में मालामाल किया जा सकता है और करोड़ों नए रोजगार पैदा किए जा सकते हैं। यदि हमारे ये देश यूरोपीय राष्ट्रों की तरह संपन्न हो गए तो उनमें स्थिरता ही नहीं आ जाएगी बल्कि यूरोप के राष्ट्रों की तरह वे युद्धमुक्त भी हो जाएंगे। पिछले 50-55 वर्षों में लगभग इन सभी राष्ट्रों में मुझे दर्जनों बार जाने और रहने का अवसर मिला है। भारत के लिए उनकी सरकारों का रवैया जब-तब जो भी रहा हो, जहां तक इन देशों की जनता का सवाल है, भारत के प्रति उनका रवैया मैत्रीपूर्ण रहा है। इसीलिए भारत के प्रबुद्ध और संपन्न नागरिकों को जन-दक्षेस के गठन की पहल तुरंत करनी चाहिए। वह दक्षेस के नहले पर दहला सिद्ध होगा।

बुजूर्गों में सेहत समस्याएं और अन्य चुनौतियाँ

डॉ अश्वनी कुमार मल्होत्रा

कुछ दिन पहले मेरे मित्र ने व्हाट्सप्प पर अपनी माता जी के 96 वे जन्म दिन की कुछ तस्वीरें भेजी। मैंने अपने मित्र को फ़ोन कर के बधाई दी और कहा कि मैं और मेरी पतनी उनसे मिलने और उनका आशीर्वाद लेने एक दिन जरूर आएंगे। जब हम उनसे मिले तो उनके मुख पर तेज और मुस्कान देख कर मन बहुत प्रसनन्न हुआ इधर उधर कि बाते करते हुए जब मैंने उनसे उनकी सेहत का राज़ पुछा तो उन्होंने कहा, ङ्ग बेटा मैं ने सदा सादा जीवन जिया हैं और संयुक्त परिवार में रही हूँ, जहाँ मुझे हमेशा प्यार ही मिला है । कुलदीप (मेरे मित्र कि और इशारा कर) के पिता की एक एक्सीडेंट में मौत के बाद, उसने, उसकी पतनी और उसके बच्चो ने मेरा ध्यान रखा है और मुझे यह कभी अहसास नहीं होने दिया कि मैं अकेली हू। उनके मुख से ये शब्द सुनकर मुझे उन बज़ुर्गों की बात याद आ गई जो अपनी पतनी की मौत, बच्चो के विदेश में बस जाने के बाद, बच्चों द्वारा जायदाद धोखे से अपने नाम कराने और प्रताड़ित होने के बाद या किसी अन्य कारण से, स्वेत्छा से या मजबूर होकर अपनी पतनी के संग या अकेले ही वृद्ध आश्रम में रह रहे है। अकेलेपन, अन्य शारीरिक, मानसिक, मनोविज्ञानिक और आर्थिक परेशानियों के कारण ये बजुर्ग हालत से मजबूर जीवन से अपने परिवार के भरोसे और आसरे पर रहते है या किसी वृद्ध आश्रम में रहकर अपनी बाकी बची ज़िन्दगी को काट रहे है। अपनी ज़िन्दगी में मैंने अपने माता पिता और परिवार के अन्य बड़े सदस्यों और बज़ुर्ग मरीज़ो को अपनी सेहत और अन्य परेशानियों को हिम्मत और उत्साह के साथ सामना करते हुए और स्वीकार करते हुए देखा है, पर कभी कभी उनको किसी लम्बी बीमारी या किसी परिस्तिथि से निराश होते हुए भी देखा है। जीवन की संध्या में इस प्रकार निराशा से घिर कर, हार मानकर कुछ बजुर्ग आत्महत्या तक कर लेते है। मनोचिकित्सक की एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में 65 वर्ष और इसके अधिक आयु के बज़ुर्गों में आत्महत्या का दर बड़ा है जो चिंताजनक है।

मनुष्य, अन्य जीव जंतु की तरह अपने जीवन में उम्र के साथ कई शारीरक और मानसिक बदलाव से गुजरता है। माँ के गर्भ में वो भ्रूण से जन्म के बाद शिशु के रूप में और बचपन से युवा अवस्था तक, फिर वयस्क और प्रौढ़ होते हुए बूढ़ा हो जाता है और अंत में उस प्राणी की मौत हो जाती है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमे अंगो के काम करने की क्षमता धीमी पड़ जाती है, जिसके फलस्वरूप कुछ लोगो में यह अंग शीघ्र बीमार हो जाते है और कुछ लोगों में देर से बीमार हो जाते है और अंत में काम करना बंद कर देते है। पर यहाँ पर मैं मौत की नहीं जीवन की बात करना चाहता हूँ और आपके साथ बज़ुर्गों की समस्याओं और समाधान के साथ उनकी अपने अनुभवों को सांझा करना चाहता हूँ। शारीरक बदलाव और बीमारियां : एक दिन आप उठकर जब आईने में अपना चेहरा देखते है तो चौक जाते है। अरे यह कौन है, जिस के सर के बालो में कही कही सफेद बाल झलक रहे है, चेहरे पर झुरिआ और गाल पिचके हुए है। आपकी चाल धीमी हो गई है और जहाँ पर सुबह की सैर, बिना रुके एक घंटे तक कर लेते थे, अब आप को आधे घंटे बाद ही थकावट हो जाती है। अपने कार्य के दौरान मुझे अक्सर कोर्ट में मेडिकोलीगल और पोस्ट मोर्टेम के केसों के सम्बन्ध में एक्सपर्ट विटनेस के तौर पर जाना पड़ता था।

आपके पीठ के पीछे कौन सही रहता है यह मायने रखता है, सनराइजर्स हैदराबाद के डगआउट में भी जगह ना मिलने डेविड वॉर्नर का छलका दर्द

नई दिल्ली (एजेंसी)। डेविड वॉर्नर इन दिनों बल्लेबाजी में अपने खराब दौर से गुजर रहे हैं। आईपीएल 2021 में बल्ला खामोश रहने के चलते उनको सनराइजर्स हैदराबाद की पहले कप्तानी गंवानी पड़ी और अब प्लेइंग इलेवन में भी वॉर्नर को जगह नसीब नहीं हो रही है। जिस टीम की अगुवाई वॉर्नर ने पांच साल तक की और 2016 में टीम को चैंपियन भी बनाया उसी हैदराबाद की टीम के डगआउट में भी वॉर्नर को शामिल नहीं किया जा रहा है। टीम में हो रही अपनी बेकदरी को लेकर वॉर्नर ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक सीक्रेट मैसेज लिखकर अपना दर्द बयां किया है। दरअसल ये चेन्नई सुपर किंग्स

के खिलाफ खेले गए मुकाबले में डेविड वॉर्नर को टीम में शामिल नहीं किया गया। हद तो तब हो गई जब वॉर्नर टीम के डगआउट में भी नजर नहीं आए। वॉर्नर मैच के दौरान होटल रूम में रहे और उन्होंने वहीं से टीवी पर मैच देखा। वॉर्नर ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी शेयर करते हुए लिखा श्यह मायने नहीं रखता है कि कौन आपके चेहरे पर रियल है बल्कि यह मायने रखता है कि कौन आपके पीठ के पीछे रियल रहता है।श् इसके साथ ही वॉर्नर ने एक शॉर्ट वीडियो भी शेयर किया जिसमें वह टीवी पर हैदराबाद की टीम को चीयर करते हुए नजर आ रहे हैं। हैदराबाद को सीएसके के खिलाफ 6 विकेट से हार का सामना करना पड़ा और इसके साथ ही टीम प्लेऑफ की दौड़ से भी बाहर हो गई। वॉर्नर की यह हालत देख फैन्स भी काफी दुखी नजर आए और उन्होंने इस चैंपियन खिलाड़ी के सपोर्ट में ट्वीट किए।

डेविड वॉर्नर ने आईपीएल 2021 में खेले अपने 8 मैचों में महज 107७73 के स्ट्राइक रेट से 195 रन बनाए हैं। इस दौरान उनके बल्ले से सिर्फ दो अर्धशतकीय पारी देखने को मिली है। हैदराबाद के हेड कोच ट्रेवर बेलिस ने संकेत दिए थे कि वॉर्नर बचे हुए मैचों में प्लेइंग इलेवन में शायद ना दिखे और टीम युवा खिलाडि़यों को मौका देना चाहती है। उन्होंने कहाए श्हम अब फाइनल में जगह नहीं बना पाएंगे तो हमने फैसला लिया है कि हम ज्यादा से ज्यादा युवा क्रिकेटरों को मैदान पर उतारेंगे। युवा क्रिकेटरों को सिर्फ ग्राउंड पर ही नहीं सेट.अप में रहने के ज्यादा से ज्यादा मौके मिलेंगे। इसी वजह से फैसला लिया गया और डेविड वॉर्नर इकलौते ऐसे अनुभवी खिलाड़ी नहींए जिन्हें होटल में छोड़ा गया। हमारे पास कई ऐसे युवा खिलाड़ी हैंए जो अभी तक ग्राउंड पर आए ही नहीं हैंए यहां तक कि रिजर्व के तौर पर भी नहीं। हम उन्हें मौका देना चाहते थेए ऐसा आगे आने वाले मैचों में भी देखने को मिल सकता है।

महिला बिग बैश में धमाल मचाती नजर आएंगी विकेटकीपर बल्लेबाज ऋचा घोष, होबार्ट हरिकेंस के साथ किया करार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला टीम की विकेटकीपर बल्लेबाज ऋचा घोष इस साल बिग बैश में होबार्ट हरिकेंस की तरफ से खेलती हुई नजर आएंगी। वह इस लीग में शामिल होने वाली टीम इंडिया की तरफ से सातवीं खिलाड़ी हैं। इससे पहले स्मृति मंधानाए दीप्ति शर्माए जेमिमा रोड्रिग्स जैसी प्लेयर बिग बैश में टीमों के साथ करार कर चुकी हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेली गई वनडे सीरीज में ऋचा भारतीय टीम का हिस्सा रहीं थीं और उन्होंने बल्ले से अपने प्रदर्शन से सभी को प्रभावित किया था।

ऋचा पहले वनडे में 32 रन बनाकर नाबाद रही थींए जबकि दूसरे मुकाबले में उन्होंने 44 रनों की शानदार पारी खेली थी। घोष के साथ हुए करार के बाद होबार्ट का दल क़रीब.क़रीब पूरा हो गया हैए हालांकि उन्हें अब बस रेचल ट्रेनामैन की रिप्लेसमेंट तलाशनी है। घोष के अलावा साउथ अफ्रीका की मिनॉन डुप्री और न्यूज़ीलैंड की रेचल प्रीस्ट दो और विदेशी खिलाड़ी होबार्ट का हिस्सा हैं। इससे पहले स्मृति मंधाना और दीप्ति शर्मा ;सिडनी थंडरद्धए शेफ़ाली वर्मा और राधा यादव ;सिडनी सिक्सर्सद्ध और जेमिमा रॉड्रिग्स और हरमनप्रीत कौर ;मेलबर्न रेनेगेड्सद्ध

का भी इस लीग में अलग.अलग टीमों के साथ क़रार हो चुका है। महिला बिग बैश लीग की शुरुआत 14 अक्टूबर से होनी है और पहला मुकाबला सिडनी सिक्सर्स और मेलबर्न स्टार्स के बीच में खेला जाना है। टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला 27 नवंबर को होगा। पिछले सीजन सिडनी थंडर ने मेलबर्न को हराकर खिताब को अपने नाम किया था।

श्रीलंका ने टी.20 वर्ल्ड कप के लिए टीम में जोड़े पांच नए खिलाड़ीए मिनोद भानुका और रमेश मेंडिस को मिली जगह

नई दिल्ली (एजेंसी)। 17 अक्टूबर से यूएई और ओमान में खेले जाने वाले टी.20 विश्व कप के लिए श्रीलंका ने अपनी टीम में पांच नए खिलाडि़यों को शामिल किया है। इसमें मिनोद भानुकाए अशेन बंडाराए लक्षण संदाकन और रमेश मेंडिस का नाम शामिल है। वर्ल्ड कप के लिए टीम में चुने गए लाहिरू मदुशंका फिट नहीं होने की वजह से टीम का हिस्सा नहीं होंगे। टी.20 विश्व कप के लिए श्रीलंका की कमान दासुन शनाका के हाथों में सौंपी गई है और टीम इस बार क्वालिफायर मैच खेलकर सुपर 12 में अपनी जगह पक्की करने की कोशिश करेगी। टी.20 वर्ल्ड कप के लिए श्रीलंका के स्कवाड में अब 23 खिलाड़ी हो गए हैं। श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने कहा कि खेल मंत्री नमल राजपक्षे ने अतिरिक्त खिलाडि़यों को टीम में शामिल करने को मंजूरी दे दी है। मिनोद भानुका का प्रदर्शन भारत के खिलाफ खेली गई सीरीज में बढ़िया रहा था। श्रीलंका ने 12 सितंबर को दासुन शनाका की कप्तानी में 15 मुख्य खिलाडि़यों और चार रिजर्व खिलाडि़यों की घोषणा की थी। श्रीलंका टीम शनिवार को ओमान रवाना होगी। श्रीलंका 18 अक्टूबर को नामीबिया के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी।

वीरेंद्र सहवाग ने बताया, सुरेश रैना को खराब फॉर्म के बावजूद क्यों नहीं ड्रॉप करेंगे एमएस धोनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग;आईपीएलद्ध 2021 में चेन्नई सुपर किंग्स प्लेऑफ में पहुंचने वाली पहली टीम बन गई है। सीएसके ने गुरुवार को सनराइजर्स हैदराबाद को हराकर प्लेऑफ में जगह बनाई। सुरेश रैना की खराब फॉर्म सीएसके के लिए चिंता का विषय है। लेकिन भारत के पूर्व ओपनर वीरेंद्र सहवाग का मानना है कि खराब फॉर्म के बावजूद एमएस धोनी उन्हें टीम से ड्रॉप नहीं करेंगे। रैना ने आईपीएल 2021 के पहले फेज में मुंबई इंडियंस के खिलाफ पहले मुकाबले में 54 रन बनाए थे। इसके बाद से रैना ने आईपीएल 14 में केवल 103 रन बनाए हैं। सहवाग ने क्रिकबज के एक शो में बातचीत में कहा एश्हमें यह जानते है कि रैना प्रदर्शन नहीं कर रहे हैंए लेकिन वह बाएं हाथ के बल्लेबाज के बारे में नहीं सोच रहे होंगे। लेकिन रैना अगर 20.30 गेंद के आसपास खेलते हैं और 10.20 रन बनाते हैंए तो उन्हें कुछ आत्मविश्वास मिलेगा। सीएसके को पता है कि उनकी बल्लेबाजी में गहराई है और यहां तक कि शार्दुल ठाकुर भी अच्छा कर सकते हैं। इसलिए सुपर किंग्स को ज्यादा चिंता नहीं होगी।श्

उन्होंने आगे कहाए श्इससे पहलेए हमने रैना के बैटिंग लाइनअप में धोनी से आगे आने की बात की थी। धोनी ने खुद ऊपर ना आकर रैना को भेजाए जो खराब शॉट खेलकर आउट हो गए। मुझे नहीं लगता कि यह कोई चिंता की बात हैए लेकिन धोनी चाहेंगे कि रैना प्लेऑफ से पहले कुछ रन बना लें। रैना के पास छोटे फॉर्मेट में जितना अनुभव हैए उससे उनके प्लेऑफ में रन बनाने से पूरी तरह इनकार नहीं किया जा सकता है। कई बार बल्लेबाजों को कोशिश करने के बावजूद रन नहीं मिलते। गौरतलब है कि आईपीएल 2021 में रैना ने अभी तक 11 मैचों में 19७62 की औसत से 157 रन बनाए हैं और उनका स्ट्राइक रेट 127७64 का है।

केविन पीटरसन पर बरसे ऑस्ट्रेलिया के टेस्ट कप्तान टिम पेन, कहा- एशेज सीरीज होगी चाहे जो रूट आए या नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया टीम के टेस्ट कप्तान टिम पेन ने इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज केविन पीटरसन को आड़े हाथों लिया है। पीटरसन ने हाल ही में ट्विटर पर ऑस्ट्रेलिया के कड़े क्वारंटाइन नियमों पर सवाल उठाए थे और कहा था कि खिलाड़ी बायो.बबल में रहकर थक चुके हैं। पीटरसन ने नियमों को हटाने तक की मांग की थी। इंग्लैंड के कई खिलाड़ी एशेज सीरीज में ऑस्ट्रेलिया के कड़े क्वारंटाइन नियमों को देखते हुए हटने पर विचार कर रहे हैंए जिसमें इंग्लिश कैप्टन जो रूट का नाम भी शामिल है। कंगारू कप्तान ने साफ किया कि एशेज का आयोजन होगा चाहे रूट आए या नहीं।आपके पीठ के पीछे कौन सही रहता है यह मायने रखता हैए सनराइजर्स हैदराबाद के डगआउट में भी जगह ना मिलने डेविड वॉर्नर का छलका

दर्द सेन होबार्ट्स के साथ बातचीत करते हुए पेन ने कहाए श्एशेज आयोजित की जाएगी। पहला टेस्ट आठ दिसंबर से शुरू होगाए भले ही जो ;रूटद्ध यहां आए या नहीं। वह सभी आना चाहते हैं इसमें कोई शक नहीं है। वे खुद को बेस्ट संभावित परिस्थितियों में लाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन आखिर में हम सब भी ऐसा ही कर रहे हैं। उनके पास विकल्प है कि वह यहां आने के लिए फ्लाइट में बैठना चाहते हैं या नहीं। कोई भी किसी भी इंग्लैंड के खिलाडि़यों को यहां आने के लिये बाध्य नहीं कर रहा है। हम जिस दुनिया में रहते हैं वह उसकी खूबसूरती है कि आपके पास विकल्प होता है। अगर आप नहीं आना चाहते तो मत आओ। पीटरसन को आड़े हाथों लेते हुए पेन ने कहाए श्वह ;पीटरसनद्ध हर चीज के विशेषज्ञ हैंए इसमें कोई शक नहीं है। केवए इस पर फैसला खिलाडि़यों पर छोड़ दीजिए उन्हें बोलने दीजिए। हमने एक भी इंग्लैंड के खिलाड़ी को यह कहते हुए नहीं सुना कि वे नहीं आ रहे हैं।श् एशेज सीरीज की शुरुआत 8 दिसंबर से होनी है और पहला ही मुकाबला गाबा में खेला जाना है। सीरीज का पांचवां और आखिरी मैच पर्थ में होना है।

गांवों में गांधी जयंगी उत्सव की तरह मनाये लोग : डीएम

गांधी जयंती मनाने की बनी रूपरेखा, जिलाधिकारी ने अधिकारी को दिया आवश्यक दिशा निर्देश

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने समस्त जिला स्तरीय अधिकारी को आदेशित किया है कि 02 अक्टूबर, 21 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी गाँधी जयन्ती समारोह सम्मानपूर्वक आयोजित किया जायेगा।

उक्त अवसर पर सभी राजकीय भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाये एवं सभी कार्यालयों, विद्यालयों और अन्य संस्थाओं के किसी बड़े कक्ष या हाल में कार्यालयाध्यक्ष/वरिष्ठ अधिकारी/संस्थान के प्रधानाचार्य या अध्यक्ष द्वारा प्रातः 09:00 बजे महात्मा गाँधी जी के एक बड़े चित्र का अनावरण व माल्यार्पण किया जायेगा। उसके बाद गाँधी जी के जीवन-संघर्ष, उनकी देश-सेवा, उनके जीवन-मूल्यों पर प्रकाश डाला जाये तथा गोष्ठी का आयोजन किया जाय। विशेष रूप से निर्बलों एवं कमजोरों के कल्याण सम्बन्धी अन्त्योदय की उनकी अवधारणा, भावनात्मक एकता राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के सम्बन्ध में उनके विचारों का संक्षेप में परिचय दिया जाय। सादा जीवन उच्च विचार मितव्ययिता, नैतिकता, भाईचारा तथा सर्वधर्म सम्भाव जैसे आदर्श जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी जाय। उन्हें यह भी समझाया जाये की देश को कमजोर करने वाली शक्तियों से सावधान रहते हुए राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा करना उनका पुनीत कर्तव्य है, जिसका संकल्प आज के दिन दोहराया जाना चाहिए। जिलाधिकारी ने जिला पंचायत राज अधिकारी/उप जिलाधिकारी/तहसीलदार/अधिशासी अधिकारी को निर्देशित किया कि प्रधान सेक्रेटरी, लेखपाल, गॉव में उपस्थित होकर वृहद साफ-सफाई कराएं। उन्होंने यह भी कहा कि 02 अक्टूबर को प्रत्येक गॉव में उत्सव की तरह मनाया जाए। श्रमदान के द्वारा साफ-सफाई किया जाए। जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि प्रत्येक गॉव में पोषाहार का वितरण किया जाए एवं बीमारियों के सम्बन्ध में लोगो को जागरूक किया जाए।

जिलाधिकारी ने समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रत्येक विकास खण्ड में कम से कम पॉच-पॉच गॉव में स्वच्छता के सम्बन्ध में विशेष प्रचार-प्रसार करायेंगे तथा गांवो में स्वच्छता शौचालय के सफाई के संबंध में उक्त कार्यक्रम के तहत जो गॉव सर्वश्रेष्ठ पाया जायेगा, उसे पुरस्कृत किया जाएगा। उन्होंने डूडा को निर्देशित किया कि मलिन बस्तियों की अपनी उपस्थिति में साफ-सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित करायेंगे। उन्होने निर्देशित किया कि कार्यक्रमों/गोष्ठी के दौरान वर्तमान में कोविड-19 के दृष्टिगत शासनादेशों द्वारा निर्धारित प्रोटोकॉल का अनुपालन करते हुए गोष्ठी के अवसर पर प्रतिभाग करने वाले प्रतिभागियों द्वारा प्रत्येक दशा में मास्क/फेस कवर का प्रयोग किया जाय। मास्क/फेस कवर का प्रयोग करते हुए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन सुनिश्चित किया जाय।

शिक्षकों ने सौपा पत्रक

चौरी। रोटहा स्थित ब्लॉक संसाधन केंद्र पर खंड शिक्षा अधिकारी लालजी को अध्यक्ष पूर्व माध्यमिक विद्यालय ब्लाक भदोही के साथ शिक्षकों ने एक पत्रक सौंपा। शुक्रवार को महा निदेशक स्कूल शिक्षा लखनऊ के नाम पत्रक के माध्यम से कहा गया कि डीबीटी डाटा फीडिंग का कार्य शिक्षकों के स्थान पर ब्लाक संसाधन केंद्र पर तैनात प्रशिक्षित कंप्यूटर आपरेटर एवं कार्यालय सहायक से कराया जाय। पत्रक देते समय विभाग द्वारा विभिन्न आदेश के क्रम में डीबीटी फीडिंग एवं अपलोडिंग का कार्य सहायक अध्यापक से कराये जाने का दबाव बनाया जा रहा है। जबकि प्रशिक्षित कंप्यूटर आपरेटर फीडिंग हेतु परिषदीय विद्यालयों में विभाग द्वारा कंप्यूटर टेबलेट जैसे आवश्यक उपकरण उपलब्ध नही कराये गए है। साथ ही अधिकतर शिक्षक डाटा फीडिंग जैसे कार्य में दक्ष नही है। डीबीटी का उक्त कार्य करने में शिक्षक असमर्थ है। इस अवसर पर अजीत कुमार अध्यक्ष पूर्व माध्यमिक विद्यालय संघ ब्लाक भदोही, मनोज कुमार दुबे, अजय सिंह, धीरेंद्र सिंह, संतोष तिवारी आदि मौजूद रहे।

माफिया और बाहरी प्रतिनिधियों से विकास की उम्मीद नहीं : रंगनाथ

फर्जी मुकदमें में फंसाकर परिवार को किया गया प्रताड़ित

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। उत्तर प्रदेश में पूर्व की रही सरकारों में गृह मंत्री सहित कई मंत्रालयों को संभाल चुके पंडित रंगनाथ मिश्र ने कहा कि भदोही जनपद को विकास के रास्ते पर आगे ले जाना है तो माफिया और बाहरी जनप्रतिनिधियों के खिलाफ जनता को आगे आना होगा। बता दें कि श्री मिश्र को प्रयागराज एमपी एमएलए कोर्ट ने आय से अधिक सम्पत्ति के आरोप से बाइज्जत बरी कर दिया है। शुक्रवार को ज्ञानपुर में हुई प्रेस वार्ता में श्री मिश्र बाहरी जनप्रतिनिधियों, माफिया और पुलिस के गठजोड़ पर काफी आक्रामक रहे। उन्होंने जिले के ज्ञानपुर विधायक विजय मिश्र पर गंभीर आरोप लगाते हुये उन्हें दुर्दान्त अपराधी बताया। कहा कि पुलिस से मिलीभगत करके मुझे फर्जी मामले में फंसाया गया था। वह भी ऐसे आरोप में जिसका न कोई

साक्ष्य था और न ही कोई प्रमाण। श्री मिश्र ने कहा कि उन्होंने 20 साल विधायक रहते हुये भदोही को विकास के पथ पर अग्रसर किया।

सरकार की कई योजनायें जनपद में लायी। भदोही को जिला का दर्जा दिलाने के लिये संघर्ष किया। लेकिन उन्हें जिले को विकास पथ पर लाने की सजा मिली। फर्जी मुकदमें में फंसाकर उन्हें और उनके परिवार को लगातार प्रताड़ित किया गया। कहा कि मैंने पिछले दस साल तक जो मानसिक यंत्रणा झेली है, उसकी कल्पना से ही सिहर जाते है। पहली बार अहसास हुआ कि जब माफिया नेता और पुलिस मिल जाते है तो किसी की भी जिंदगी बर्बाद कर सकते है। श्री मिश्र ने कहा कि बिना किसी साक्ष्य के उनके उपर मुकदमा दर्ज किया गया और लगातार दो दिन तक उनके घर की तलाशी ली गयी। उनकी विकासवादी छवि को खराब करने के लिये भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर माहौल बनाया गया।

संवेदनहीन हो चुकी है प्रदेश सरकार : जाहिद

अखंड भारत संदेश

भदोही। समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक जाहिद बेग ने शुक्रवार को प्रेस वार्ता कर 26 सितंबर को सड़क दुर्घटना में मृतक के परिवार जनों को अब तक सरकारी सहायता न मिलने पर चिंता व्यक्त करते भाजपा सरकार को जनता के प्रति संवेदहीन करार दिया। पूर्व विधायक ने बताया कि औराई के गिरिया भाला की घटना जिसमे ट्रैक्टर पलटने पर तीन की मौत 13 घायल हुए थे। लेकिन अब तक मृतक के परिजनो से डीएम व एसडीएम मिलने तक नही गये।शोक संवेदना में भी पहुचा तो पता चला कि अब तक कोई नही आया नाही परिवारिक लाभ जो त्वरित मिलता

है वह ही मिला। सब्जी बेच कर परिवार चलाने वाले की मृत्यु पर परिवार जनो के समक्ष अधिक संकट हो गया है। पूर्व विधायक ने 24 घंटे में मृतक परिवार को तत्काल परिवारिक लाभ व सरकार से दस लाख की सहायता करने की मांग किया। उन्होंने भाजपा सरकार पर तीखी प्रक्रिया देते कहा कि संवेदनहीन सरकार हो चुकी है। जब सीएम ही ऐसे है तो अधिकारी भी उसी लय में मस्त है। लेकिन अधिकारियों को समझना चाहिए सरकारे आती जाती रहती है। अधिकारी का रवैया ठीक होना चाहिए।

नगद सहित हजारो का सामान चोरी

चौरी। बाजार में बीती रात चोरों ने एक मकान में घुसकर नगद सहित हजारो रुपये का सामान उठा ले गए। पीड़ित की सूचना पर पुलिस मामले की जांच कर रही है। वहीं शुक्रवार को शाहिद अख्तर ने पुलिस को दिए तहरीर में कहा है कि बीती रात चोर छत के सहारे घर में घुस गए और पैंट के अंदर से पर्स के अलावा एक छोटा बैग उठा ले गए। पर्स में 5500 रुपया नगद के अलावा एटीएम व आधार था। जबकि बैग में एक सप्ताह पहले खरीदा गया 17000 हजार का मोबाइल और एक पुरानी मोबाइल भी चोर लेकर फरार हो गए।

घोसिया चेयरमैन ने विकास कार्यों का किया लोकार्पण

अखंड भारत संदेश

घोसिया। नगर पंचायत घोसिया में अध्यक्ष रजिया नुमान द्वारा सदररोड तकिया पर नगर के विकास कार्य एवं लोकार्पण का कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस दौरान नगर अध्यक्ष रजिया नुमान ने कहा कि शासन के मंशाअनुरूप नगरवासियों को बिजली, पानी, राशनकार्ड, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, आवास सहित विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। कहा कि नगर में साढ़े चार करोड़ की लागत से शिवमंदिर पर इंटरलाकिंग का कार्य, विभिन्न

वार्डों में 48 सड़क, अम्बेडकर पार्क का विकास कार्य, मदरसा का सुन्दरीकरण सहित नगर का अन्य विकास कार्य कराया जायेगा। नगर अध्यक्ष रजिया नुमान ने कहा कि नगर का स्थायी कूड़ा डम्पिंग केन्द्र शीघ्र हीं तैयार कराया जा रहा है। उस कूड़ा से खाद बनकर तैयार होगा जो किसानों के कृषि कार्य में उपयोगी होगा। कहा कि आने वाले समय में आदर्श नगर पंचायत घोसियां में इतना विकास कार्य करा दिया जाएगा कि जनता को किसी भी कार्य के लिए बोलना नहीं पड़ेगा। कार्यक्रम में उपस्थित कुछ नगरवासियों ने कहा कि नगर अध्यक्ष रजिया नुमान हिंदू मुस्लिम एकता के प्रतीक है। वह सभी अमीरों व गरीबों के यहां सुखों व दुखों में पहुंचकर भागीदारी करते है। इस अवसर अधिशासी अधिकारी महेन्द्र कुमार, रूखसार अहमद, इदरीस अंसारी, संतोष कुमार, सुनील कुमार समेत नगरवासी उपस्थित रहे।

कांग्रेस में मचे घमासान पर सलमान खुर्शीद की सलाह- पार्टी नेता बैठ कर संवाद करें

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस में आंतरिक कलह की वजह से पार्टी अपने ही नेताओं के निशाने पर है। हाल ही में दिग्गज पार्टी नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम ने कांग्रेस पार्टी में तर्कपूर्ण विमर्श ना होने को लेकर अपनी लाचारी जताई थी। अब पार्टी के एक और नेता सलमान खुर्शीद ने कहा कि पार्टी नेताओं के बीच बातचीत होनी चाहिए। सलमान खुर्शीद ने कहा, 'चिदंबरम जी आइए हम सब मिलकर बातें करें.. आपस में वार्ता करें.. आप जैसे बुद्धिमान लोग शांत ना रहें.. जिन लोगों ने कपिल सिब्बल के घर के आगे नारेबाजी की, हम उनसे वार्ता भी कर सकते हैं..उनकी बात भी सुन सकते हैं.. हम कार्यकर्ताओं से आपसी संवाद स्थापित कर सकते हैं क्योंकि हमारे संगठन के लिए यह बहुत जरूरी है.. जब हम उनसे बात करेंगे तो हमें पता चलेगा कि हमारी गलती क्या है.. हम सब के बारे में तो बहुत कुछ कहते हैं, लेकिन हमें यह भी देखना पड़ेगा कि हम क्या कर रहे हैं। नवजोत सिंह सिद्धू के पार्टी अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद सलमान खुर्शीद ने एक फेसबुक पोस्ट लिख कर अपनी बात कही थी। उन्होंने लिखा था कि नए मुख्यमंत्री के बनने के बाद उम्मीद की किरण जगी हैं, चीजे नियंत्रण से बाहर हो गई थीं। पंजाब के बारे में अपनी राय रखते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हमें यह लगातार प्रार्थना करना चाहिए वहां जो भी आपसी मतभेद है उसे सुलझा लिया जाएगा और पार्टी अगली बार फिर से यहां सत्ता में आए। आपको बता दें कि पंजाब कांग्रेस में जारी संकट को लेकर कपिल सिब्बल, गुलाम नबी आजाद, मनीष तिवारी के बाद अब पी चिदंबरम ने भी को सलाह दी थी। पी चिदंबरम ने गुरुवार को एक ट्वीट करते हुए कहा था कि जब हम पार्टी मंचों के भीतर सार्थक बातचीत शुरू नहीं कर पाते हैं तो मैं असहाय महसूस करता हूं।

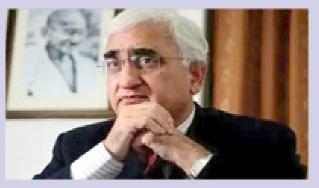

मध्य प्रदेशः बच्चों के अस्पताल में बेड हो गए फुल, डेंगू, वायरल बुखार और निमोनिया के लक्षणों से बेहाल

भोपाल **(एजेंसी)।** मध्य प्रदेश के विभिनन्‍ शहरों में बच्चों के अस्पताल में बेड फुल होने लगे हैं। डेंगू, वायरल बुखार और निमोनिया की चपेट में आने के बाद यहां पर बड़ी संख्या में बच्चे अस्पतालों में भर्ती हुए हैं। राज्य में विभिनन्‍ जगहों से बच्चों के अस्पताल में बेड कम पड़ने की शिकायतें भी सामने आने लगी हैं। यह आलम तब है जबकि राज्य स्वास्थ्य और मेडिकल एजुकेशन विभाग ने पिछले एक महीने में बेडों की संख्या 526 से बढ़ाकर 1050 कर दी है। इस बीच वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि पिछले महीने ग्वालियर में तीन बच्चों की वायरल बुखार से मौत हुई थी। इसके अलावा राज्य में कहीं और से मौतों की सूचना नहीं है। जबलपुर के सुभाषचंद्र बोस सरकारी मेडिकल अस्पताल का पीडियाट्रिक वार्ड 40 बेड की क्षमता वाला है। इन दिनों यहां पर 70 बच्चे भर्ती हैं। वहीं बच्चों के आईसीयू में कोई जगह नहीं बची है। जितने बच्चे यहां भर्ती हैं उनमें 7 को डेंगू है, जबकि अन्य निमोनिया और वायरल फीवर की चपेट में हैं। अस्पताल अधीक्षक डॉ. आर तिवारी कहते हैं कि सितंबर में वायरल फीवर और निमोनिया की चपेट में आने वाले बच्चों की संख्या बढ़ी है। उन्होंने कहा कि पीकू में बिल्कुल भी जगह नहीं है। डॉ. तिवारी ने बताया कि यहां पर क्षमता से 150 फीसदी ज्यादा बच्चे भर्ती हैं। हम जल्द ही अतिरिक्त बेडों का इंतजाम करने में लगे हैं।

बच्चों के पैरेंट्स की शिकायत, बता नहीं रहे हुआ क्या है

ग्वालियर और पड़ोसी जिलों शिवपुरी और दतिया का भी ऐसा ही कुछ हाल है। ग्वालियर के कमला राजे सरकारी अस्पताल में 56 बेड के पीकू अस्पताल में 133 बच्चों को भर्ती किया गया है। यहां भर्ती बच्चों के माता-पिता ने अस्पताल के हालात और सुविधाओं पर नाखुशी जताई। हिंदुस्तान टाइम्स के साथ बातचीत में शिवपुरी जिले के जिगनी गांव की रहने वाली धनकुंवर आदिवासी ने कहा कि मेरी चार साल की बेटी पिछले पांच दिन से तेज बुखार की चपेट में है। उसे

ग्वालियर रेफर किया गया है। पिछले चार दिन से मेरी बेटी को दो अन्य बच्चों के साथ बेड पर भर्ती किया गया है। उसने बताया कि डॉक्टरों से अपनी बेटी की बीमारी के बारे में पूछे जाने पर कोई जवाब नहीं मिलता। वो लोग बस उसे दवाएं दिए जा रहे हैं।

हिंदुस्तान टाइम्स ने इस मामले में चीफ मेडिकल और हेल्थ अफसर डॉक्टर मनीष शर्मा से बात की। डॉक्टर शर्मा ने बताया कि जल्द ही 100 बेड का एक अस्पताल बच्चों के लिए तैयार हो जाएगा। अभी जो बच्चे भर्ती हैं, उन्हें तेज बुखार, पेट में दर्द और फ्लू की शिकायत है। इंदौर के चाचा नेहरू चिल्ड्रन हॉस्पिटल के 100 बेडों में से 80 पर बच्चे भर्ती हैं। लेकिन पीकू वार्ड बात करें तो यहां पर 40 बेडों पर 55 बच्चों का इलाज किया जा रहा है। इंदौर के बिचोलिया हाप्सी की रहने वाली योगिता शर्मा ने बताया कि मेरे छह साल के बच्चे को शरीर में खुजली हो रही है। इसके अलावा उसे तेज बुखार भी है। यहां पीकू वार्ड फुल है तो मैं उसे घर पर रखकर ही दवाएं दे रही हूं। मैं बेड शेयर करने का रिस्क नहीं ले सकती। प्रदेश के अन्य छोटे जिलों, जैसे भिंड, मुरैना और राजगढ़ में तो बच्चों वार्ड में खड़े होने की भी जगह नहीं है। मुरैना के जिला अस्पताल स्थित पीकू वार्ड में 13 बेडों पर 40 बच्चों का इलाज चल रहा है। बच्चों के माता-पिता का कहना है कि अस्पताल ने अब यहां पर बच्चों को भर्ती करना बंद कर दिया है।

वहीं राज्य के स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि जमीनी हकीकत ने यहां पर स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ाए जाने के दावे की पोल खोल दी है। जन स्वास्थ्य अभियान अभियान की कन्वेनर अमूल्य निधि कहती हैं कि मध्य प्रदेश की स्वास्थ्य सुविधाएं वायरल बुखार से जूझ रहे बच्चों का इलाज करने में नाकाम रही हैं। अगर कहीं वास्तव में कोरोना की तीसरी लहर आ गई तो यहां पर क्या हाल होगा अगर बच्चे उससे प्रभावित हुए और उन्हें आइसोलेशन और ऑक्सीजन की जरूरत होगी तो भला कैसे मुहैया कराई जाएगी उन्होंने कहा कि छोटे जिलों में तो हालात और ज्यादा गंभीर हैं। सरकार को युद्धस्तर पर इसके लिए इंतजाम करने होंगे। वहीं कुछ स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि इन बच्चों को कोरोना टेस्ट किया गया है। लेकिन वैसे ही लक्षण होने के बावजूद सभी की रिपोर्ट निगेटिव आई है। वहीं मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री प्रभुराम चौधरी ने कहा कि अक्टूबर अंत क प्रदेश के विभिनन्‍अस्पतालों में 3200 बेड बढ़ा दिए जाएंगे। इनमें से 992 बेड ऑक्सीजन सपोर्ट वाले रहेंगे।

...जब चन्नी मेट पीएम मोदी, तोहफा देकर किया स्वागत; किसान और कृषि कानून पर चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चननी ने शुक्रवार को यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से उनके आवास पर मुलाकात की। मुख्यमंत्री बनने के बाद चननी की मोदी से यह पहली मुलाकात है। सूत्रों ने बताया कि बैठक में किसानों के मुद्दे पर चर्चा की गई। मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के किसान, पिछले साल नवंबर से तीन कृषि कानूनों के खिलाफ दिल्ली की सीमाओं पर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और कानूनों को निरस्त करने की मांग कर रहे हैं। सूत्रों ने कहा कि धान खरीद में देरी भी बातचीत के एजेंडे में थी। सीएम पद की शपथ लेने के बाद कई बार उन्होंने कहा है कि वह केंद्र से कृषि कानूनों को

जल्द वापस लेने की मांग करते हैं। ऐसा नहीं होने पर विधानसभा का विशेष सत्र बुलाया जाएगा। इससे पहले गुरुवार को पंजाब के मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार से मांग की थी कि वह 1 अक्टूबर से धान की खरीद को स्थगित करने के लिए जारी पत्र को वापस ले लें। धान की सरकारी खरीद सामान्य तौर पर एक अक्टूबर को शुरू होती है। उन्होंने इस मामले में प्रधानमंत्री से व्यक्तिगत हस्तक्षेप की मांग की थी।

इस मुलाकात के बाद सीएम चननी ने कहा कि यह एक शिष्टाचार मुलाकात थी। चननी ने बताया कि 'मैंने पीएम से कहा कि वो प्रदर्शन कर रहे किसानों के मुद्दे को खत्म करवाएं और प्रदर्शनकारी किसानों से बातचीत शुरू करें। मैंने उनसे मांग की है कि तीन कृषि कानून रद्द होना चाहिए। मैंने पीएम से यह भी आग्रह किया है कि कोविड-19 की वजह से बंद करतारपुर कॉरिडोर को जल्दी से जल्दी फिर से खोला जाए। सीएम चरणजीत सिंह चननी की पीएम से यह मुलाकात ऐसे समय में हुई है जब एक दिन पहले ही पूर्व सीएम अमरिंदर सिंह ने केंद्रीय गृहमंत्री से मुलाकात की थी। हालांकि, इस मुलाकात के बाद कैप्टन अमरिंदर सिंह ने कहा था कि गृहमंत्री से उनकी सुरक्षा के मसले पर बातचीत हुई है। पीएम नरेंद्र मोदी और चरणजीत सिंह चननी की इस मुलाकात की कुछ तस्वीरें भी सामने आई हैं। एक तस्वीर में नजर आ रहा है कि सीएम चननी, पीएम मोदी को खास तोहफा दे रहे हैं। एक अन्य तस्वीर में यह नजर आ रहा है कि दोनों आसपास बैठे हैं और उनके बीच वार्ता चल रही है। बहरहाल चननी और पीएम मोदी की इस मुलाकात के इसतर कांग्रेस महासचिव और पंजाब में पार्टी मामलों के प्रभारी हरीश रावत ने शुक्रवार को केंद्र सरकार को चेतावनी दी कि वह पंजाब की बहुमत की सरकार को गिराने की कोशिश न करें। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस नेता नवजोत सिद्धू और मुख्यमंत्री चरनजीत सिंह चननी की बातचीत आगे बढ़ी है।

पीएम मोदी और गडकरी के बीच मतभेदों पर क्यों नहीं होती बात, पंजाब में रार पर बोले कन्हैया कुमार

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल ही में लेफ्ट से सेंटर में आए कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने कहा है कि केवल यही पार्टी भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) से लड़ सकती है। राहुल गांधी की मौजूदगी मंगलवार को कांग्रेस का हाथ थामने वाले जेएनयू स्टूडेंट यूनियन के पूर्व अध्यक्ष ने पंजाब में पार्टी की कलह पर भी अपनी बात रखी और बीजेपी का उदाहरण देकर पूछा कि पीएम मोदी और सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के बीच मतभेदों पर बात क्यों नहीं होती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, कन्हैया ने कहा, ''कांग्रेस चांद की तरह है। कई बार यह बढ़ता हुआ प्रतीत होता है, लेकिन यह होता नहीं। फिर भी बीजेपी से लड़ने के लिए यह एकमात्र विकल्प है।'' पंजाब कांग्रेस में झगड़े और जी 23 नेताओं

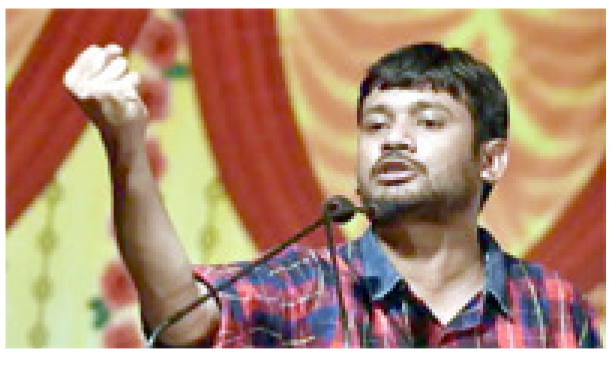

के असंतोष पर युवा नेता ने कहा, ''परिवार में हमेशा कुछ मुद्दे और शिकायतें होंगी, लेकिन यदि एक तरफ बीजेपी है तो दूसरी तरफ केवल कांग्रेस है। क्यों पीएम मोदी और नितिन गडकरी के बीच मतभेदों को नजरअंदाज किया जाता है।2024 लोकसभा चुनाव में विपक्ष के चेहरे को लेकर कन्हैया ने कहा, ''लोग तय करेंगे कि पीएम मोदी के विरोध में वह ममता बनर्जी को अपना नेता चाहते हैं या राहुल गांधी को।'' कांग्रेस की सदस्यता लेते समय कन्हैया कुमार ने कहा था कि सबसे पुरानी पार्टी को बचाए बिना देश को नहीं बचाया जा सकता है। कन्हैया ने कांग्रेस को सबसे पुरानी पार्टी के अलावा इसे सबसे अधिक लोकतांत्रिक भी बताया था।

बिना सिर के शरीर का क्या फायदा... कांग्रेस को अध्यक्ष की जरूरत, अब शिवसेना ने कसा सहयोगी दल पर तंज

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना ने कहा है कि कांग्रेस पार्टी को पूर्णकलिक अध्यक्ष की जरूरत है। पार्टी ने कहा कि कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर व्याप्त भ्रम पंजाब में राजनीतिक संकट के लिए उतना ही जिम्मेदार है, जितना कि भाजपा। महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ शिवसेना ने दावा किया कि राहुल गांधी हालांकि कांग्रेस पार्टी में कई मुद्दों का समाधान करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन पार्टी के पुराने नेताओं का उन्हें रोकने के लिए भाजपा के साथ गुप्ता समझौता है और इसलिए वे पार्टी को डुबाने के लक्ष्य के साथ काम कर रहे हैं।

शिवसेना ने अपने मुखपत्र 'सामना' के संपादकीय में लिखा है, ''कांग्रेस को पूर्णकालिक अध्यक्ष की जरूरत है। बिना सिर के शरीर का क्या फायदा ...कांग्रेस बीमार है और उसका इलाज करना चाहिए, लेकिन इलाज सही है या गलत उसकी समीक्षा की जानी चाहिए।

संपादकीय में शिवसेना ने आरोप लगाते हुए कहा, ''राहुल गांधी किले की मरम्मत करना चाहते हैं। किले का रंग-रोगन करने का प्रयास कर रहे हैं। सीलन, गड्ढों को भरना चाहते हैं, परंतु पुराने लोग राहुल गांधी को ऐसा करने नहीं दे रहे। राहुल गांधी को रोकने के लिए इन लोगों ने अंदर से भाजपा जैसी पार्टी से हाथ मिला लिया है, ऐसा अब पक्का हो गया है। कांग्रेस को डुबाने की सुपारी कांग्रेसियों ने ही ली है। यह मान्य है, परंतु कांग्रेस को स्थायी अध्यक्ष दो। पार्टी का सेनापति नहीं है तो लड़ें कैसे''

शिवसेना ने कहा, ''पुराने दिग्गज कांग्रेसियों की यह मांग भी गलत नहीं है। कांग्रेस पार्टी में नेता कौन है यह सवाल ही है। गांधी परिवार है, परंतु नेता कौन अध्यक्ष कौन इस बारे में भ्रम होगा, तो उसे दूर करना चाहिए। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की नेतृत्व वाली शिवसेना कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के साथ मिलकर महा विकास आघाड़ी सरकार चला रही है।

अंग्रेजों को भारत सरकार का करारा जवाब, यूके से आने पर 10 दिन क्वारंटीन रहना होगा जरूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय कोरोना वैक्सीन सर्टिफिकेट को मान्यता न देने वाली ब्रिटिश सरकार को भारत ने करारा जवाब दिया है। अब ब्रिटेन से आने वाले लोगों के लिए भारत में 10 दिनों तक क्वारंटीन में रहना जरूरी होगा।

ब्रिटेन ने भारत के कोरोना वैक्सीन सर्टिफिकेट को अब तक मान्यता नहीं दी है, जिस पर जवाबी कार्रवाई करते हुए यह फैसला लिया गया है। पहले ब्रिटेन ने भारत में लगने वाली कोविशील्ड वैक्सीन को ही मंजूरी प्राप्त टीकों से बाहर रखा था, जिस पर भारत ने उसे 'जैसे को तैसा' रवैया अपनाते हुए कार्रवाई की चेतावनी दी थी। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने वैक्सीन को तो मंजूरी दे दी, लेकिन तकनीकी पेच फंसाते हुए सर्टिफिकेट पर सवाल

उठा दिया था। भारत की ओर से जारी किए गए ये नए 4 अक्टूबर से लागू होने वाले हैं।

इन नियमों से किसी भी देश की नागरिकता रखने वाले लोगों को कोई छूट नहीं होगी। ब्रिटेन से आने वाले हर यात्री को 10 दिनों क्वारंटीन में रहना ही होगा। यही नहीं इसके लिए वैक्सीनेशन के स्टेटस का भी कोई प्रावधान नहीं रखा गया है। भले ही आने वाले यात्री को कोरोना वैक्सीन के दो टीके लग चुके हों, लेकिन उसे आइसोलेशन में रहना होगा। इसके अलावा भारत आने के लिए भी कुछ नियम तय किए गए हैं। ब्रिटेन से आने वाले यात्रियों के लिए यह जरूरी होगा कि सफर से 72 घंटे पहले तक के कोरोना आरटीपीसीआर टेस्ट की रिपोर्ट उनके पास हो।इसके अलावा एयरपोर्ट पर पहुंचने के बाद भी एक आरटीपीसीआर टेस्ट किया जाएगा। यही नहीं भारत आने के 8 दिनों के बाद एक बार फिर से इस टेस्ट से गुजरना होगा। भारत आने के बाद घर पर या फिर संबंधित एड्रेस पर (जहां यात्री को जाना हो) 10 दिन तक क्वारंटाइन में रहना जरूरी होगा। भारत सरकार ने स्वास्थ्य मंत्रालय और उड्डयन मंत्रालय को इन नियमों को लागू कराने का आदेश दिया है। बता दें कि हाल ही में ब्रिटिश सरकार ने 4 अक्टूबर से लागू होने वाली ट्रैवल गाइडलाइंस जारी की थीं।

अब पूर्व आईआरएस अधिकारी ने छोड़ा कांग्रेस, प्रीता हरित बोलीं- वहां अनाथ जैसा महसूस होता है, प्रबंधन खराब है

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस पार्टी को एक और बड़ा झटका लगा है। अब पूर्व आईआएस अधिकारी प्रीता हरित ने पार्टी को अलविदा कह दिया है। प्रीता हरित ने कांग्रेस की पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। अपने इस्तीफे के बाद प्रीता हरित ने कहा कि 'यहां प्रबंधन काफी खराब है। यहां एक अनाथ की तरह महसूस होता है। वो हमारी सेवाओं का इस्तेमाल नहीं करते हैं। मैंने यहां दलित बहुजन कम्यूनिटी के अधिकार को लेकर पार्टी को ज्वाइन किया था। लेकिन पार्टी इनके मुद्दों को नजरअंदाज कर रही है।' उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी में काफी कन्फ्यूजन है। हमें यह नहीं मालूम कि किसे रिपोर्ट करना है और हमें काम कौन देगा। बता दें कि पंजाब में कैप्टन अमरिंदर सिंह के पार्टी छोड़ने के ऐलान और नवजोत सिंह सिद्धू के पंजाब कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद से पार्टी के अंदर घमासान मच गया है। कई नेताओं ने पंजाब में अपने पद से इस्तीफा दिया है तो कई वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी की कार्यशैली पर सवाल खड़े कर दिये है। कांग्रेस को यूपी में भी झटका लगा है। कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी उत्तर प्रदेश में पार्टी को मजबूत करने की कोशिश के तहत प्रदेश के दौरा कर रही है लेकिन इसके बावजूद पार्टी से नेताओं का जाना रुक नहीं रहा और इसी कड़ी में नया नाम है पार्टी की प्रदेश इकाई के उपाध्यक्ष गयादीन अनुरागी का जिन्होंने शुक्रवार को समाजवादी पार्टी का दामन थाम लिया। अनुरागी शुक्रवार को समाजवादी पार्टी के एक संवाददाता सम्मेलन में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की मौजूदगी में सपा में शामिल हुए। सपा में शामिल होने के बारे में पूछे जाने पर, राठ (हमीरपुर) के पूर्व विधायक अनुरागी ने कहा कि वह कांग्रेस में सहज महसूस नहीं कर रहे थे, क्योंकि वहां उनकी बात नहीं सुनी गई थी।

तालिबान से याराना की वजह से गर्दन पर लटकी अमेरिकी प्रतिबंधों की तलवार, पाकिस्तान को नजर आया भारत का हाथ

इस्लामाबाद (एजेंसी)। अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज होने के लिए तालिबान की मदद करना पाकिस्तान को बहुत महंगा पड़ सकता है। अमेरिकी संसद में रिपब्लिकन सीनेटर की ओर से पेश किए गए एक विधयेक में पाकिस्तान पर प्रतिबंधों की मांग की गई है। छींक भी आने पर भारत को कोसने वाले पाकिस्तान ने गर्दन पर लटकी तलवार के लिए इशारों में भारत को जिम्मेदार बताया है। पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने शुक्रवार को कहा कि इस विधेयक के पीछे पड़ोसियों और लॉबियों का हाथ है। शाह महमदू कुरैशी ने कहा कि अफगानिस्तान में आतंकवाद से पाकिस्तान प्रभावित रहा है। कुरैशी ने कहा, ''हम नहीं चाहते हैं कि यहां दोबारा आतंकी संगठन एकत्रित हों। अमेरिकी संसद में पाकिस्तान पर प्रतिबंध की मांग करने वाले विधेयक को लेकर कुरैशी ने कहा कि पाकिस्तान अपना बचाव करेगा और सहयोग में विश्वास करता है।

कुरैसी ने कहा, ''अमेरिकी कांग्रेस को पाकिस्तान की भूमिका (अफगानिस्तान संकट में) समझनी चाहिए। लॉबीज और पाकिस्तान के पड़ोसी इस विधेयक के पीछे हैं।'' गौरतलब है कि विधेयक में इस बात की मांग की गई है कि तालिबान को अफगानिस्तान की सत्ता कब्जाने में पाकिस्तान ने किस तरह मदद की, इसकी जांच होनी चाहिए। 20 से अधिक अमेरिकी सीनेटर्स ने मंगलवार को यह बिल पेश किया जिसमें अफगानिस्तान में तालिबान और इसकी मदद करने वाली विदेशी सरकारों पर प्रतिबंध की मांग की गई है।

अदालतों में पहुंची जलवायु परिवर्तन की लड़ाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। जलवायु परिवर्तन से निपटने में राजनीतिज्ञों की नाकामी को देखते हुए एशिया से लेकर दक्षिण अमेरिका और यूरोप तक के एक्टिविस्ट अपने अपने देश की सरकारों और प्रदूषण फैलाने वाली कंपनियों को अदालत में खींच रहे हैं.जलवायु परिवर्तन सम्मेलन, कॉप 26 करीब आ रहा है और जलवायु आंदोलनकारी खुद को ठगा महसूस कर रहे हैं क्योंकि लक्ष्य निर्धारण की कोशिशें बेकार जा रही हैं. पेरिस का जलवायु समझौता न सिर्फ इरादे से खाली है बल्कि अपनी प्रतिबद्धताओं पर भी वो खरा नहीं उतरा है. इस बीच फॉसिल ईंधन कंपनियों का बिजनेस पहले की तरह चालू है, भले ही उनमें से कई कंपनियों को 2050 तक नेट जीरो उत्सर्जन का लक्ष्य भी मिला हुआ है. चल पड़ी है मुकदमों की लहर जलवायु परिवर्तन और फॉसिल ईंधन के प्रदूषण से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले समुदाय महसूस करते हैं उनके पास अब प्रदूषण करने वालों को अदालत ले जाने के सिवा कोई विकल्प नहीं बचा है. मई में शेल कंपनी के खिलाफ अदालत ने फैसला सुनाया

था कि उसे 2030 तक अपने उत्सर्जनों में 45 प्रतिशत तक की कटौती करनी होगी. इस ऐतिहासिक फैसले के बाद दुनिया भर की तमाम अदालतों में जलवायु से जुड़े मुकदमों की लहर चल पड़ी है. मानवाधिकारों के अंतरराष्ट्रीय संघ (इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर ह्यूमन राइट्स- एफआईडीएच) ने हैशटैग सीयूइनकोर्ट (अदालत में मिलेंगे) के नाम से एक व्यापक मुहिम लॉन्च कर दी है. इस फेडरेशन में 100 से ज्यादा देशों के 192 मानवाधिकार समूह शामिल हैं. और इसने प्रदूषण करने वाले निगमों और कॉरपोरेटों के खिलाफ समन्वित अदालती कार्रवाई का बीड़ा उठाया है. चिली के एनजीओ- ऑब्जरवेटोरियो सियुडाडानो और दो अन्य संगठन, एईएस जेनेर (वर्तमान में एईएस एंडीज) कंपनी के स्वामित्व वाले कोयला आधारित ऊर्जा संयंत्रों से होने वाले जलवायु दुष्प्रभावों और जहरीली गैसों के रिसाव के मामलों के खिलाफ एक बचाव याचिका अदालत में दायर कर रहे हैं।

कोलम्बिया में एक मानवाधिकार संगठन साजार स्थानीय समुदायों के एक समूह के साथ मिलकर मानवाधिकार पर अंतर-अमेरिकी आयोग में शिकायत डाल रहा है. ये याचिका अरोयो ब्रूनो नदी का रुख मोड़े जाने के बारे में है. ये लातिन अमेरिका की सबसे बड़ी खुली कोयला खदान कार्बीनेस डेल केरेजोन की विस्तार योजना का हिस्सा है. एफआईडीएच के सदस्य संगठन, ऑब्जरवेटोरियो सियुडाडानो के निदेशक खोसे आइलविन का कहना है, ठआज का दिन बहुत सारी कंपनियां याद रखेंगी।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।
आरएनआई नं.
UPHIN 2001/9025